नमः श्रीआदिनाथाय योगमार्गप्रवर्तिने

वन्दे मातरम्

भविष्य-वाणी-सञ्चय

Shri Haribamsha Prasad Upadhyay Baskota,
श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय बास्कोटा,
Ishwariniwas, Nepalganj. (Ban...)
ईश्वरी निवास, नेपालगंज, (बाँके
P.O. RUPAIDIHA, Dist. Bahraic...

सञ्चेता योगी
[illegible]नाथ सैन्धव

गोरक्ष टिल्ला
मैदागिन काशी

गोरक्षग्रन्थमाला में स्वल्पकाल में प्रकाशित

ग्रन्थपुष्प

	मू०
१ गोरक्षस्तुतिमञ्जरी	१॥)
२ गोरक्षयोगमञ्जरी	१)
३ गोरक्षसहस्रनाम	०)
४ गोरक्षसहस्रनाम गकारादि	[illegible]
५ गोरक्षस्तोत्रभूतिः	≡)॥
६ गोरखवंशावली नं० भा०	२)
७ योगबीजम्	।)
८ योगसाहस्री	।॥)
९ श्रीनाथग्रन्थसूची	०)
१० श्रीनाथकथासारः	१)
११ श्रीनाथतीर्थावली	०)
१२ नवनाथकथा	।॥)
१३ नवनाथकथा (गुजराती)	०)
१४ भैरवनाथावतारकथा	=)
१५ सांख्यवसन्तः	।)
१६ शान्तिचरितम्	॥)
१७ हीरानाथचरितम्	०)
१८ भर्तृहरिनिर्वेदनाटकम्	१)
१९ नीलकण्ठयात्रा छप रही है	१।)
२० सिद्धचर्पटनाथपद्धतिः	=)
२१ चर्पटशतकम्	।=)
२२ दिव्योपदेशः नं० भा०	।)
२३ संस्कृतपारसीकपदप्रकाशः	१)
२४ भक्तविजयकाव्यम्	॥=)
२५ वाक्यपदीयब्रह्मकाण्डः	१)
२६ मत्स्येन्द्रपद्यशतकम्	।॥)
२७ महार्थमञ्जरी	॥)
२८ आदेशार्थप्रकाशः	।=)
२९ अमरकथा	२)
३० अमरालोकः	१॥)
३१ युक्तेन्दुवृत्तविन्दुः	१)
३२ नियमावलिः	०)
३३ नवलनाथचरितम्	
३४ भगवान गोरक्षनाथ की अवतारकथा	
३५ श्रीपादेश्वरीस्तोत्रसंग्रहः	।–)
३६ चारों युगों में योगिराज	
३७ श्रीपादेश्वरीशतकम्	।–)
३८ श्रीनाथशतकम्	।–)
३९ अत्याश्रमिविवेक छप रहा है	५)

नोट—रेखाङ्कित पुस्तकें नहीं हैं ०) मूल्यवाली पुस्तकें =) का टिकट भेजनेपर भेजी जाती हैं। विशेष केलियें जवाबी कार्ड लिखें॥

मिलने का पता—गोरक्षटिल्ला, मैदागिन, काशी।

मुद्रक :—रामनिधि त्रिपाटी, शिवराम प्रेस, मध्यमेश्वर, काशी।

ॐ

नमः श्री आदिनाथाय योगमार्गप्रवर्त्तिने।] [गोरक्ष-ग्रन्थमाला का अठतीसवां पुष्प

भविष्यवाणी सञ्चय

Shri Haribamsha Prasad Upadhyay Baskota,
श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय पास्कोटा,
Ishwariniwas, Nepalganj, (Banke),
ईश्वरी निवास, नेपालगंज, (बाँके
P. O. RUPAIDIHA, Dist. Bahraich, (U. P.)

प्राप्तिस्थान व प्रकाशिका
योगप्रचारिणी
गोरक्ष टिल्ला मैदागिन काशी

सञ्चेता योगी
चन्द्रनाथ सैन्धव,

श्री

संवत् २०१०] मूल्य १-०-० [प्रथमावृत्ति १०००

ॐ

मृगस्थली स्थली पुण्या भाले नेपालमण्डले ।
यत्र गोरक्ष-नाथेन मेघमालाऽसनीकृता ॥

* * *

आदि-मत्स्येन्द्र - गोरक्ष - जलन्धर - पदानुगा ।
योग-प्रचारिणी भूयात् सभा भव्याय भारते ॥

* * *

शङ्कर-नरहरि-चन्द्रा, मृगस्थलीस्थाः प्रचारिणो योगिन् ।
त्रिभुवन-वीरे राजनि, शासति गोरक्षसाम्राज्यम् ॥

* * *

कल्पसंवत् १९७२९४९०५४
विक्रमसंवत् २०१०
नेपालसंवत् १०७३

सर्वाधिकारसुरचित

श्रीः

सञ्चेता का

प————————————————ता

हम बेघरों से क्यों घर पूछते हो ? ।
गया घर तो फिर क्यों शहर पूछते हो ? ॥
बटावे को पाकर छुडाया वतन ।
तो निर्वासी से क्यों नगर पूछते हो ? ॥
लुटेरों ने लूटा तलासी में लूटा ।
फकीरों से फिर क्यों समर पूछते हो ? ॥
उधर के रहे न इधर के रहे हम ।
ज़लीलों से फिर क्यों बसर पूछते हो ? ॥
वतन छोड प्रहलाद भा बेवतन ।
खबीसों की फिर क्यों खबर पूछते हो ? ॥

निवेदन

इस पुस्तिका में उद्धृत कथा कहानी गद्य पद्य अथवा कहावतें जिन २ महानुभावों से प्राप्त हुए है उनके नाम साथ साथ लिख दिये गये हैं। यदि किसी का नाम भूल से रह गया हो या उलटा सुलटा हो गया हो तो क्षमा करें॥ जिस ग्रन्थ से जो विषय उद्धृत है उसमें किसी प्रकार की भी भूल रह गई हो तो निवेदन है कि सम्पादक महानुभाव क्षमा प्रार्थना स्वीकार करेंगे॥

भविष्यद्वाणी के संग्रह कार्य में विशेष सहयोग देने वाले सज्जन—

१—आयस मेघनाथजी योगी महूडों का चौक जोधपुर।

२—रामगोपालजी दर्जी गीरदीकोट जोधपुर

३—दुर्गादासजी नवां शहर (द्वाबा) जि० जालन्धर

४—हुकुमतमल, (सिन्धी) सोनी रामबाग कानपुर

५—पुस्तक प्रकाशनी चौकेलाव किल्ला जोधपुर

७—नन्दगिरीजी देवनगर दिल्ली

८—देवीनाथ जी मृगस्थली नेपाल

९—भविरवत वाक संग्रह, संग्रह कर्त्ता भाः प्रतापसिंघ हजुरिया।

———

विषय-सूची

विषय	पृ०	विषय	पृ०
सञ्चेता का पता	३	सिखसाहित्य में भविष्यवाणी	६८
निवेदन	४	पेशीनगोई शेख नेमतउला	६९
शुद्धिपत्र	५	फुरमान शाह नेमत उलजी	७०
भूमिका	७	सरवंग साधुदे अनभवीवाक	७२
हमारी आरम्भिक कहानी	९	साखी नं० ६१ दशमेशगुरु	७५
मेरी प्रार्थना	१६	पुराणों में भविष्य वाणी	७८
सिद्धोंकी भूतकालकी वाणी	१७	समाचारपत्रोंमें भविष्यवाणी	८२
सिद्धों की भविष्य वाणी	२४	शुभाशुभ की विचारवाणी	८४
लक्ष्मण कुण्डली	३३	भगवान् का अवतरण	८६
शुक्र हंस वाक्यम्	३७	गोरक्ष डिब्बी	८९
वीर भद्र की वाणी	३८	सत्ययुग कब होगा ?	९२
साधकों की भविष्य वाणी	४४	दो घटनायें	९४
भक्तों की भविष्य वाणी	५६	उपसंहार	९७
प्रचलित भविष्य वाणी	६३		

शुद्धि-पत्र

अशुद्ध,	शुद्ध,	पं० पृ०
मायू,	माई,	१७-१८
भालो,	भोलो,	१२-१९
पजाव,	पंज़ाव,	४-२१
गवू,	गवूं,	४-२७
भाणिजी,	भाणिजी,	१३-२७
वुलासी,	वुलावसी,	१७-२८
झपाटो,	झपाटों,	५-३०
वम्बई,	सिन्ध,	५-३१
भाखैगे,	भाखैंगे,	२-३२
धृतसरूपी,	धृतसरूपी,	१२-३३
सिष्टी,	सिष्टी,	५-३४
चौसढ,	चौसठ,	२३-३४
तस्तकरा,	तस्सकरा,	८-३६
हलमाहि,	दलमाहि,	१५-४६
रामेला,	रमेला,	१८-४६
स्यार्भरा,	श्यामरा,	६-४७
वढावेला,	कढावेला,	१६-४९
गलियुग,	कलियुग,	२-५०
वन्घ,	वन्ध,	१-६१
खण्डाकलसा,	खण्डाफलसा,	७-६२
क्यों धरें,	क्योंनधरे,	१८-६२
क्यों धरे,	क्योंनधरे,	१२-६३
लुलेंगे,	लुटेंगे,	१२-६४
मए,	भए,	१४-६४,
विश्व[illegible]र्जि,	विश्वस्फूर्जि,	२४-७९
वातारण,	वातावरण,	२-८७
परियाण, !	परियाण, ।	१२-८९
मंगलमूर्ति,	मंगलमूर्ति,	२२-८९
वहाँ का,	वहाँ की,	७-९३
दूरदर्शीता,	दूरदर्शिता,	१०-१७-९७
श्रुतितथो,	श्रुतिपथो,	१०-१००

और भी वर्णाशुद्धि हों तो पाठक महोदय शोध लें ॥

卐

भूमिका

मेरी यह इच्छा नहीं थी कि मैं लेख लिखूँ या किसी प्रकार का संग्रह करूँ किन्तु श्रीनरहरिनाथ जी की सङ्गति और श्रीनाथसाहित्य सामग्री से आकर्षित तथा नवभारत (समाचार पत्र) के किसी एक अंक में प्रकाशित वीरभद्र की भविष्यवाणी की चर्चा से उत्साहित होकर ही अतीतकालके महापुरुषों के भविष्य-सम्बन्धी शब्दों का संग्रह करके उसे पुस्तक रूप में आबद्ध करने में प्रयत्नशील हुआ हूँ ॥

इस संग्रह में सर्व प्रथम भूतकाल विषयक ऐतिहासिक शब्दों का संचय है। यद्यपि ये शब्द ज्ञान की पराकाष्ठा के द्योतक हैं तो भी दर्शन शास्त्रों में यह पाया जाता है कि सृष्टि के आदि में सिवा एक ब्रह्म के और कुछ भी नहीं था—

कहा बूझै अवधू राई गगन न धरणी। चन्द न सूर दिवस न रैणी ॥
मूल मण्डाण कछू नही होता, नही होता धरण अकाशा।
गगन मण्डल में अलख गरूरा वासा ॥

ब्रह्मेच्छा के प्रस्फुरित होने से सृष्टि का आरम्भ क्रम बँधता है। निर्लोभी निरहङ्कारी जीव जाति का जन्म होना प्रारम्भ होता है—

ब्रह्मा विष्णु आद महेशा, तीना नै मै जाया।
तीना रे घर नार कही जूं, तीना नै गोद खिलाया ॥
विनु लोभ राजा होता डाण न भरावता,
कोट किला नहीं वेता गुफा माहीं रेवता ॥
चतुर्मास रैण होती, नर नारी पोढ़ता।
अंगे अंग भीडता न नैणा फल लोड़ता ॥

सृष्टि का क्रम उत्तरोत्तर भयंकर रूप धारण करता जाता है। वेदों में भी एकत्व भाव नहीं रहता। मोह ममता राग द्वेष अहंकार

के वशी भूत होकर मनुष्य रामायण महा भारतादि भयंकर पापमय युद्ध लड़ने को प्रवृत्त होता है। स्वयं भी भ्रमता है औरों को भी भ्रमाता रहता है—

दुबध्या कहां से आई, नवां २ रूप धर्या जग माही, सबकूँ दिया भरमाई ॥ ऋगु कहे निरगुण परमेश्वर ॥ जुजुर कहे वो ब्रह्म अखंडित ॥ स्याम कहे सरगुण परमेश्वर ॥ अथर कहे सब परपंच है। तेता जुग मध्ये मत दोय रचीला राम रामायण कीना। नर बानर दोनों लडि लडि मूवा तिनहूँ ज्ञान न चीन्हा ॥ घर घर नादी, घर घर वादी, घर घर कथणा हारूँ। कलिजुग मध्ये मत च्यारि रचीरा चूकीला आचारूँ ॥

इस प्रकार भूत कालका सूक्ष्म इतिहास बताने के पश्चात् कलि-युग का व्यौरा है। कलियुग में मनुष्यों की प्रवृत्ति कैसी होगी? आचार विचार कैसे होंगे ? राजा कौन कौन हुए ? कौन होंगे? और कितने दिन राज्य भोंगेंगे? भविष्य की स्थिति कैसी होंगी? यह सब उत्तरोत्तर स्पष्ट रूप से वर्णन किया है।

२०१९ तक क्या होगा? इस विषय में सर्वंग साधु के वचन पढ़ने योग्य हैं ॥

गोरक्ष नाथ जी से देवी ने क्यों वैर बांधा और ज्वाला जी में खीचड़ी क्यों पक रही है? इस का वर्णन सूक्ष्म तया दिया गया है ॥ भगवान् कल्कि के पापीष्ठ नाम क्यों हुए? पाकल-नाथ जी ने शूद्रों को आशीर्वाद क्यों दिया? ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्रोंके अनुयायी क्यों बन रहे हैं? यह कथा पाकलनाथ जी के इतिहास से मिलेगी ॥ सत्य युग कब होगा? इस विषय के अनेकानेक चुटकीले इस में संगृहीत हैं। इस भविष्यवाणी संग्रह में नेपाली, पाली राजस्थानी, हिन्दी, सिन्धी, पञ्जाबी, गुजराती,

वङ्गाली आदि भाषा हैं। लोहेरी लाठी, लोहेरी लीक, खीरखाण्डरा मेला, सोनेवरणी, रूपेवरणी, घड़ियरो, आदि शब्दों के प्रयोग और धजा झूलशे साधो सिन्ध में वाजे अनहदतूर, उभारहि अरजन परिखिहु अरजन, जोयने विचारो हक हालणू, आदि वाणी विशेष विचारणीय हैं ॥ भगवान् का अवतरण—आक में आम, पान में फल, पीपल में पुष्प, नीम में दाख लगने पर और उनके विशेष चरित्रों का वाहुल्य पश्चिम देश या चितोड़ में होने का संकेत मिलता है।—नागरे वेलरे फल लागसी पीपल फूलेनि समाय। चित्तोड़ चवरी रांचसी परणेला आलम राय ॥ चित्तोड़ चौरी दिल्ली डेरा गुदड़ी होसी वजार इत्यादि।

किन्तु खेद की बात है कि जिन हृन्मन्दिरों में प्रथाचाल के दीपक जगमगाते थे वे मन्दिर आज ढह गये हैं और वे दीपक बूझ चुके हैं अतः उक्त विपय का गौरव या स्पष्टीकरण अन्धकार के गृह गह्वर में ही गुप्त हैं ००००० ।—

सञ्चेता

ॐ नमः श्रीआदिनाथाय

हमारी आरम्भिक कहानी

सम्वत् दो हजार सात वैशाख प्रविष्टे कुम्भ महापर्व के शुभ अवसर पर हरद्वार जैसे पुण्य क्षेत्र में भारत भर के योगियों का समागम होना कोई बड़ी बात नहीं थी। योगिवाड़ेके तीनों अखाड़े परिपूर्ण रूपेण भरे हुए थे। पंचायती अखाड़े में विशेष चहल पहल, और अवधूत योगियों का गमागम अधिक था। श्रीनाथजी का मन्दिर और सभामण्डप (दलिचा) अच्छे अच्छे गुलगमलों से सजे हुए थे। विद्युद्वत्ती, जलधारा, टेलीफोन, लाउड-स्पीकर आदि की व्यवस्था सुचारु थी। श्रीनाथजी का भोजन भण्डार अनवसान खुला रहता था। भूखे को अन्न प्यासे को पानी हर समय मिलता था। विद्वान योगियों (रैनी वैनी सैनी कैनी वालों) की ज्ञान चर्चा प्रत्यक्षतया कुम्भमहात्म्य का अमृत फल बाँट रही थी। लगभग पाँच हजार अवधूत योगियों की उपस्थिति भक्त पुरुषों को वांछित फल देने वाली कामधेनु ही थी। ऐसे मंगल मय समय पर श्री 'अखिल भारत वर्षीय योग प्रचारिणी' महा सभा की स्थापना हुई। इसका पालन पोषण का स्तम्भ भार सर्वयोगियों ने अपने कन्धे पर लिया। अधिकारी वर्ग का चुनाव सानन्द सपम्न हुआ। करतल ध्वनि के साथ श्रीशंभु यति गुरु गोरक्षनाथजो की जय घोषणा से समस्त दिङ्मण्डल गूंज उठा। सब योगियों ने हर्ष प्रकट किया॥

तदुपरान्त श्रीपत्रदेव और गुर्वोघ स्थापित हुए। पवनानन्द नाथ (पंख) वीरानन्दनाथ (बंक) खड़े किये गये। यथा विधि पूजन और दीक्षा क्रम समारम्भ हुआ॥ नाथ संप्रदाय में यह विधान बड़े महत्व का और अति प्राचीन है। इसमें वर्षों के उलझन मिन्टों में सुलझ जाते हैं। कारण कि पत्रदेव और गुरु पङ्क्तिके समक्ष कोई

भी योगी झूठ नहीं बोल सकता, यदि बोलेगा तो प्रत्यक्ष फल पाता है। यह विधान योगी मात्र के लिये होता है और तीन दिन तक रहता है। यह योगियों का अनादि परम्परागत नियम है ॥

योगियों की यह स्थापना विधि समाप्त हुई, कुम्भ मेला भी समाप्त हुआ। सब कोई स्वस्थानों में प्रस्थान करने लगे। हमारे शिष्ट मण्डल ने भी मरुप्रदेश के छोटे गांव से लेकर बड़े नगर तक का भ्रमण करना प्रारम्भ किया ॥

सभा का कार्यक्रम पहले ही तैयार किया जा चुका था, अत एव योगियुवकों का यह शिष्टमण्डल अ० भा० यो० प्र० म० सभा के सभापति श्रीनरहरिनाथ शास्त्रीजी के तत्त्वावधान में सर्वप्रथम श्रीनाथसाहित्य का अन्वेषण, शाखा सभाओं का संस्थापन, साक्षरता का अवलम्बन, तथा अन्यान्य सुधारोपयोगी लक्ष्यों का प्रसारण करने कराने के लिये ही पहले ही पहले मरु प्रदेश का पथिक बना ॥

हमारा परिश्रम सफल हुआ और उन्नति भी सन्तोष जनक रही। किन्तु दो ढाई महीने के अल्प काल में ही सभापति के सिवा हमारे होठ मुंह सूख कर छिल्लड़दार और गाल भी हरे पीले होकर झूर्रीदार होने शुरू होगये। यहां तक कि टांगों की अस्थिमज्जा भी पीघल कर वह निकलने की नौबत वजने लग गई ॥

कारण यह था कि हमलोग जहां भी जाते थे पहले यह मालूम करते थे कि इस गांव में परम्परागत विद्वान् कौन है ? कवि कौन है ? भाट कौन है ? इतिहास लेखक कौन है ? ग्रन्थ संग्राही कौन है ? इत्यादि जानने के पश्चात् विद्वान् जी से मिलने की भी आवश्यकता होती थी। चार चक्कर खाने के बाद विद्वान् जी से भेंट होने पाता था। विद्वान् जी कवि जी का नाम बता देते थे। कविजी भाट का घर देखा देते थे और भाट साहब लेखकजी का पता लिखा देते

थे। इस प्रकार पहाड़ी चूहे की तरह सुरंग पर सुरंग लगा कर कहीं का कहीं पहुंचना पड़ता था। वह भी कभी कभी केवल भूख प्यास मात्र का नास्ता कर के, एक तो मरुभूमि, चारो तरफ रेत ही रेत, पानी की बूंद तो कहाँ पर बबूल की छाया भी ना मिले' जून जुलाई के दिन, प्रचण्ड मार्तण्ड सिर पर खड़े क्रोध उगलें, लू देवी भी तप्त तवे के तमांचे गालों पर जड़ती जाये। ऐसी स्थिति में हमारे होठ मुंह छिल्लड़दार और गाल झूर्रीदार हो जायें और जान बच जाय यह कितनी आश्चर्य की बात है ?

एक आश्चर्य और है, दिन भर ढुलकर जो ग्रन्थ मिलते थे उनको रात भर में लिख पढ़ १० वार मिलाकर ठीक करना पड़ता था। हमारे तो दिन रात एक हो जाते थे। फिर मिलाने की काम इतना कठिन कि बोलते बोलते नाक की वायु का गमागम भी ठप्प हो जाता था॥ हमारे साथी लोग इसी आशा आधार में थे कि अध्यक्ष महोदयजी कोमल आकृति के हैं। विद्वान् लोग वैसे ही आराम तलव होते हैं, अत एव कहीं न कहीं थकेंगे और दो चार दिन कहीं अच्छी जगह पर आराम अवश्य करेंगे। तब तक हम लोग भी टाँगों में तेल तुल मालिश करके ताजे तकड़े वन जायेंगे। फिर भ्रमण करते रहेंगे। परन्तु हमारे आशा उमीदों पर पानी फिर गया। सभापति न कहीं थके, न कहीं आराम किया, न इन्हे भूखने सताया न प्यास लगी न निद्रा ने व्यापा। उलटे चंगे भले फूर्तीले बनते गये, जितना काम अधिक करें उतनी ही चुस्ती बढ़ती गई। जितने अधिक दिन होते गये और जितना अधिक काम मिलने लगा उतने ही अधिक ताजे तकड़े होते गये, मानो इनका खुराक ही कार्यकर्तृत्व था॥

हम लोगों को यह ज्ञात हुआ कि हम तो किसी जिन्न या भूत के पाले पड़े हुए हैं। न इसके कार्यों का अवसान होगा न हमें विश्राम

या छुट्टी मिलेगी। बस क्या था हमारे तो आंखों के आगे अन्धकार ही छागया हात पैर कांपने लगे दिल भी दहल गया। ऐसी मौत मार धूप में जान बचाने की सूझ सोचने लगे॥

एक ने कहा निकल चलें। ऐसी मौत मारी करने की कोई जरूरत नहीं। मैं इस (सभांपतिजी) को अच्छी तरह जानता हूँ। यह जहां भी जोभी काम करता है वह खतरे से खाली नहीं होता। कालेज में भी जब हम एक साथ पढ़ते थे तो ऐसे ही जान जोखे का काम करता था। इसका दिया हुआ बाल कोई नहीं रोक सकता था। जो रोके हात से रोके तो हात पैरसे रोके तो पैर टूट ही जाता था। यदि सिर से रोके तो चार चक्कर खाकर धराशायी होना पड़ता था। इसके उठाये हुए भार को खोई हिला भी नहीं सकता था। यदि कोई हिलाने की कोसिस करे तो भार हिलता पीछे था पहिले कमर टेढी हो जाती थी। इस लिये इसके नाम गुरु जी ने नरवीर, नरहरि, हलधर रखा था और विद्यार्थी भी इन्हीं नामों से पुकारते थे। कोई भी इसके बराबर न दौड़ सकता है न चल सकता है, न घूम सकता है, न कोई काम कर सकता है। इसका टहरना भी बड़े अचम्भे का है, पैरों को कन्धे पर रखकर। स्वयं तो इतना मीठा और मिलन सार है जो आख में छुप जाता है और दिल में समा जाता है पर काम इसके खतरनाक हैं, मानो बराबर जिन्न के ही कृत्य हों। यह चलने फिरने से कभी नहीं थकता। सर्दी गर्मी भूख प्यास तो मानो इसके खुराक हैं। इसलिए इसको लोह पुरुप भी कहते हैं। कालेज में सोता नहीं था यदि सो भी जाये तो कितना भी पानी डालो तो भी नहीं जागता था। इसके काम देव के समान ही हैं, इसलिये इसके साथ कोई नहीं रहता। अतएव इसके मुकाबले में रहकर काम करना मेरे बस का नहीं, मैं तो चला जाऊँगा॥

दूसरे ने भी यही कहा कि एक बार देहली शिव मन्दिर सत्याग्रह में हम दोनों एक साथ गिरफ्तार हुए जेल की सजा मिली, मैं तो तीन चार महीने में दूबला पतला कंकाल की तरह हो गया परन्तु इसका तो ५ सेर वजन और वढ़ गया। खाना खुराक जो मुझे मिलता था वही इसको मिलता था, वही जो जेलों में मिलता है— सुखी रोटी दाल का पानी॥

तीसरे ने कहा मैं नरहरि नाथ से सुसम्यक् परिचित हूँ। यद्यपि इनमें काम करने की वरवण्डाई देखी जाती है यह उनके मनोभाव की अत्युत्सुकता और शारीरिक शक्ति की सहिष्णुता है तो भी यह कहीं देखने में नहीं आया कि उनको काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार राग, द्वेषादि कलुषित भावों ने केवल स्पर्श मात्र भी किया हो। इनकी वृत्ति वहुत सीधी साधी और शान्ति मय है। श्री नाथ जी में अटूट श्रद्धा भक्ति है। इनका आचरण पवित्र और आदर्शमय है। स्वभाव भी इतना सरल और कोमल है कि प्रत्येक के हृदय में समा जाते हैं और आंखों में छुप जाते हैं। इनकी रचना शैली भी इतनी सरल और सरस है, कि सिद्ध विचार नाथ (भर्तृहरि) जी का स्थान ग्रहण करती है। ऐसे सर्व गुण सम्पन्न धीर वीर कार्य कुशल नेता को पाकर भी हम कायर और हतोत्साह बनें यह कितनी लज्जाजनक बात है? ऐसी स्थिति में हमारा उद्धार कैसे हो सकेगा?

इत्यादि वातें हम सभापति जी से छुपा कर अलग ही आपस में करते और दिल का दर्द दिल में ही पीकर रहते थे। इधर उधर भागने की हिम्मत किसी को नहीं हुई। यदि निकल जायें तो भी अपनी तोहीनी समझते थे। यदि रहें भी तो शरीर के पुर्जे पुर्जे ढीले हो रहे थे। सभापति जी के शीघ्रातिशीघ्र पदविन्यास का फाला करना भी हमारे पहुँच से वाहर का था। उनको

यह भी नहीं कह सकते थे कि आप धीरे चलें और धीरे काम करें क्योंकि यह हम जानते थे कि यदि ऐसा हुआ तो हमारी मन्थर गति सभापति जी के दिल का कांटा और आँखों की किरकिरी बन जायगी। तब तो दिनों का काम सालों में होने लगेगा, इस हालत में सभापति जीका मुख भी हमारे सदृश हरा पीला सूखड़ होकर भूर्रीदार होने की संभावना दूर नहीं थी। अत एव उनकी स्वाभाविक गति विधि में हटक डालने की कोसिस भी किसी ने नहीं की। वे भी अपनी अल्मस्त मस्ती में बिना दायें बायें या पीछे देखे बिना खाये पीये या विश्राम किये आगे ही आगे चले ही जा रहे हैं। पीछे वाले कहां हैं? कैसे हैं? इसकी कोई सुध नहीं। इसकी भी कोई चिन्ता नहीं कि मैं पीठाधिपति हूँ, राजगुरु हूँ, पूज्य हूँ, मुझे उत्तम यान ऊँची गादी, अच्छी मान प्रतिष्ठा होनी चाहिये। ऊँहूँ। यह तो पहले ही से पुराने पीर महन्तों के सुपुर्द कर आये थे। अत एव हमारा मन हमें बरबस ढाढस दिलाता था कि मरते मर जाओ पर ऐसे कर्मशूर महा योगी का साथ मत छोडो ॥ जैसे तैसे गर्मी के दिन निभ गये। ऋतु का परिवर्तन भी हुआ और हमारी सहायक मण्डली भी आ पहुँची। अब हमारे दिन बड़े प्रसन्नता पूर्वक बीतने लगे। राजकीय पुस्तक प्रकाशनी चौकेलाव जोधपुर में लिखने का कार्य आरम्भ हुआ पहले दो साल बड़े जोर शोर से काम चला। लेखक नाथयोगी भी अधिकाधिक आते जाते गये। स्थानीय लेखक भी वेतन पर रखे गये। इस अवसर पर सभापति जी अकेले सर भ्रमण करते रहे। राजस्थान, नेपाल, गोरखकाली (गोर्खा) आदि स्थानों में शाखा सभाओं और विद्यालयों का उद्घाटन किया। भोट तीब्बत आदि सुदूर प्रदेश के नाथाम्नायवन्धों का संग्रह करने में भी प्रायः सफल हुए। आपका यह संग्रह संस्कृत और विविध लिपी में है और गोरक्ष टिल्ला मन्दाकिनी काशी, तथा गोरक्ष पीठ

मृगस्थली नेपाल, में संरक्षित है। आपको शास्त्रार्थ महारथी योगी शंकरनाथ शास्त्री फलेग्रहि जी का पूर्ण सहयोग प्राप्त है। आप दोनों का सहवास भी एकत्र ही है। आप दोनों ही पूर्ण विद्वान् और महाकवि हैं, आप दोनों ही वड़े तितीक्षु आत्मसंयमी शांत स्वरूप और नितान्त साधारण और कोमल वृत्ति के हैं। आपका दर्शन करने से चित्त को शान्ति मिलती है। आपका सात्मसर्वस्व श्रीनाथचरणसेवामें समर्पित है। आप दोनों से श्रीनाथसम्प्रदाय का बहुत कुछ सुधार होने की आशा है॥

हम अपना दामन पसार कर, श्रीशम्भु यति गुरु गोरक्ष नाथ जी के आगे, यही भीख माँगते हैं कि हमको आप दोनों का सहयोग सदा-सर्वदा इसी प्रकार प्राप्त होता रहे॥

मेरी प्रार्थना

हमारा श्रीनाथ साहित्य संग्रह का कार्य आज तक अनवरत रूप से चल रहा है। इस कार्य क्षेत्र की परिधि अधिक विस्तृत है संगृहीत साहित्य, अधिकतर संस्कृत में है, विद्वान् योगियों की परमात्रश्यकता है। मेरी प्रार्थना है कि प्रत्येक प्रांत के ज्ञानी ध्यानी थानी मकानी, धनी मानी और रमते अवधूत एवं सद्गृहस्थ तथा नाथ सम्प्रदाय के हितेच्छुक भक्त गण इस कार्य में अपना ही दायित्व समझ कर यथा योग्य तन मन धन जन से सहयोग देने की कृपा करें और करावें तथा अपने अपने प्रांत में प्रचलित नाथसंवंधी गद्य पद्य (कथा कहानी शब्द वाणी पुस्तकस्थ या कण्ठस्थ) सप्रयत्न अन्वेषण करके संग्रह करें और गोरक्ष टिल्ला मैदागिन काशी के पते पर भेजें या सूचना दें॥

प्रार्थी योगी चन्द्रनाथ सैन्धव

सिद्धों की भूतकाल की वाणी

कहा बूझै अवधू राई गगन न धरणी।
चन्द न सूर दिवस नहि रैणी ।।टेक।।
वोऊँ कार निराकार सूषम न थूलं।
पेड न पत्र कली नहि फूलं ॥ १ ॥
डाले न मूले न वृषे न वेला।
साषी न सवद गुरु नहि चेला ॥ २ ॥
ज्ञाने न ध्याने न जोगे न जुगता।
पापे न पुन्ये न भेखे न मुकता ॥ ३ ॥
उपजै न विनसै न आई न जाई।
जुरा मरण वाके वाप न माई ॥ ४ ॥
भणत गोरष नाथ मछिन्द्र का दासा।
भाव भगति अर आस न पासा ॥ ५ ॥
(पुस्तक प्रकाश जोधपुर से)

गगन मण्डलमे अलख गरूरा वास।
कोई नर जाणे जाणन हारा ।।
निज नाम पियारा होजी ।।टेक।।
मूल मण्डाण कछू नहि होता।
नहि होता धरण अकास ।। १ ॥

चन्द्रमा सूरज कछू नहि होता।
नहि होता नवलख तारा होजी ॥ २ ॥
देव दुवार कछू नहि होता।
नहि होता पूजण हारा होजी ॥ ३ ॥
वेद कतेब कछू नहि होता।
नहि होता वाचण हारा होजी ॥ ४ ॥
पाँच तत मेरा सामी राजा ओलख्या।
जाँरी नाव लिया निसतारा होजी ॥ ५ ॥
मत्स्येंद्र प्रतापे जति गोरष बोलै।
गुरु विन घोर अन्धारा होजी ॥ ६ ॥
गगन मण्डल मै अलख गरूरा वासा।
कोइ नर जाणे जाणन हारा।
निज नाम पियारा होजी ॥
(मगनीराम जोधपुर से)

अवधू सवद निरंतर रहिये।
तहा कछु दिन वस रैणी कहिये ॥ टेक ॥
तहाँ मायू न वाप जात कुल नाही, सुच्छम नहि असथूलं।
उतपती परलै नाद विन्द नाहीं, वृप छाया नहि मूलं ॥ १ ॥
तहाँ चंद न सूर पवन नहि पानी, हिन्दू नहीं मुसलमानं।
महमद कलमा रामनाम नाहीं, भीस्त दोज नहि ज्ञानं ॥ २ ॥
देवल कहै सुनो अनभई, सूनि सूनि पयाना।
पाणी मै लौण लौण मै पाणी, तत्त हि तत्त समाना ॥ ३ ॥
अवधू सवद निरन्तर रहिये,
तहाँ कछु दिन वस रैणी कहिये ॥
(पुस्तक प्रकाश जोधपुर से)

वन्दा ज्यांरा करो विचारा,
पैला पुरुप हुवा कि दारा।
वंदा ज्यांरा करो विचारा ॥ टेक ॥

आद न होता जुगारंभ न होता, तेज नहि कोई तारा।
विना थंभ अकाश न होता, सेप न धरणी धारा ॥ १ ॥
ब्रह्मा विशनु आद महेशा, तीना नै मै जाया।
तीना रे घर नार कही जूँ, तीना नै गोद खिलाया ॥ २ ॥
मै ही जाया मै ही खपाया, मै ही खेलावण हारी।
कालो मुण्डियो एक न छडियो, रह गइ अखण्ड कवारी ॥ ३ ॥
घर ब्रह्मा रे होई ब्राह्मणी, घर जोगी रे चेली।
कलमां पढ पढ हुई तुर्किणी, जव की फिरूँ अकेली ॥ ४ ॥
ससुरो म्हारा वालो भोलो, सासु अखण्ड कवारी।
परणियो म्हारो झुले पालणे, मैंही झुलावण हारी ॥ ५ ॥
गंगा जमुना वहे सरस्वती, सुसियो रैणी तलाई।
मछेन्द्र प्रतापे जति गोरप वोलै, आगम विरला पाई ॥ ६ ॥
वन्दा ज्यांरा करो विचारा,
पैला पुरुप हुआ कि दारा।
वंदा ज्याँरा करो विचारा ॥

(पुस्तक प्रकाश जोधपुर से)

अवधू कौन जाने उन घर की।
रे वावा ! नहि है तोला धर की ॥ टेक ॥

पांच तंत का पिण्ड वनाया, तीन गुना की तर्की।
आठ इकीसों सांस मिलाई, रात दिना की भर्ती ॥ १ ॥
आठ कमल और सात सुन्न हैं, खुली कमल की खिड़की।
कौन सुन नारी की कहिये, कौन सून्न है नरकी ॥ २ ॥

तिल के ओटे राई तमासा, खबर करो वेगम की।
ज्ञानी होवे ताँ गाय वतावे, अरथ करो अन्छर की ॥ ३ ॥
सोलह सुंन पर पार सुन्न है, वहां है संतन की सरकी।
आवे न जावे मरे नही जनमे, गोरप कहे उन घर की ॥ ४ ॥
अवधू कौन जाने उन घर की।
रे बावा! नहि है तोला घर की ॥
(हीरा भारती महू से)

—:ꕥ:—

असंख जुगारे पैले ऐसडा सैलान था।
हंसले री चाल कोई जूना साध जानता।
जोगिया री रीत कोई विरला सन्त जानता ॥ टेक ॥
पैला जोगी ऐसा होता, अजर जरावता।
गगन मै वास होता सुनी फल खावता ॥ १ ॥
विनु लोभ राजा होता डाण न भरावता।
कोट किला नहि वेता गुफा माहि रेवता ॥ २ ॥
चतुर्मासि रैन होती नर नारी पौडता।
अंगे अंग न भीडता नैणा फल लोड़ता ॥ ३ ॥
हजार वर्स उमर होती बालुडा केवावता।
लुगा लटा नहि होता फूल पाति ओडता ॥ ४ ॥
अन्न पाणी नहि होता क्या खाता क्या पीवता।
सुरा गाय घणी होती दूध पी ने जीवता ॥ ५ ॥
चन्द सूर्ज नहीं होता काहेरा प्रकाश था।
हीरा मोती घणी होती ज़ालां रा प्रकाश था ॥ ६ ॥

कथन्त मछेन्द्र नाथ सुनो जति गोरषा।
आगम संकेत कोई जाने सन्त पूरषा ॥ ७ ॥

{ आयस मेघनाथ जी जोधपुर से
मीननाथ गोरखपुर पजाव से }

नोट—यह शब्द राजस्थान और पंजावमें प्रसिद्ध है। इसमें अनन्त पाठ भेद हैं।

सत जुग मध्ये कोण जोगी? स्यौ जोगी रहते कहा कवलास प्रवते। भच्छते कहा, सुनी फलं, वोलते कहा, ब्रह्मवाणी। जीव का वासा कहा होता, हाड की मौजी मधि।
सिधाय नमै ॥ १ ॥

तेता गुग मध्ये कोण जोगी, सनकादिक जोगी। रहते कहा, गिरे पर्वते, भच्छते कहा, कंद मूलं। वोलते कहा, देव वाणी। जीव का वासा कहा होता, रुध्र मधि।
सिधाय नमै ॥ २ ॥

द्वापर मध्ये कौण जोगी, राजा जोगी। रहते कहा, रुपे वृषे। भच्छते कहा, अच्यंत भिछया। वोलते कहा, सुध वुध वाणी। जीवका वासा कहा होता, तुचा मधि।
सिधाय नमै ॥ ३ ॥

कलिजुग मध्ये कौण जोगी, परजा जोगी। रहते कहा, घरे आगणे भच्छते कहा, अन पाणी। वोलते कहा, तै मै वाणी। जीव का वासा कहा होता, अन मधि।
दैताय नमै ॥

(गोरष सवदी से)

—:❀:—

कहे पारवती सुनो महादेव, असंख जुग री सैलानी।
कल्ड् काल भूलो मति भंवरा, आद अरंभ की वानी ।।टेक।।

अण्ड नहीं खण्ड नहीं सिव नहीं शक्तथा, नहीं था धरण अकासा।
चन्द सूर नहीं मेर मेखला, नहि था भोग विलासा ॥ १ ॥

पहिला भेप बावा जोग उपाया, दूजा भेप सन्यासी।
तीजा भेप तब भया वैरागी, चौथा भेप अविनासी ॥ २ ॥

कान नहीं मुद्रा गले नहीं सेली, नहीं था गुरु अर चेला।
आप ही आप न दूजा कोई, रहिता पुरुष अकेला ॥ ३ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा, तीना की इक माया।
पाँव पताल कपाल अकासा, नैना रवि शशि जाया ॥ ४ ॥

पारवती ने चरण पलोस्या शंकर करते सेवा।
मच्छेन्द्र प्रतापे जति गोरप वोले, आन मिले सब देवा ॥ ५ ॥

कहे पारवती सुनो महादेव, असंख जुगरी सैलानी।
कल्ड् काल भूलो मति भंवरा, आद अरम्भ की वानी ॥ ६ ॥

(धूनिनाथ देवास से)

—:※:—

दुवध्या कहां से आई साधो, दुवध्या कहां से आई।
नवाँ नवाँ भेद धरिया जुग माही, सब कूँ दिया भरमाई ।।टेक।।

रिगु कहे निर्गुण परमेश्वर, अगम अगोचर सोई।
आवे न जावे मरे नहि जनमे, रूप वरण नहि कोई ॥ १ ॥

जुजुर कहे वो ब्रह्म अखण्डित, और न दूजा कोई।
आप आप में परमेश्वर है, सत्त पदारथ सोई ॥ २ ॥

स्याम कहे सरगुण परमेसर, दश अवतार धराई।
गोपियाँ संग में रास रमन्ता, वेद पुराण मै गाई ॥ ३ ॥

अथर कहे सब परपंच है, सत्त पदारथ नाई।
उठ उठ जावै फेर न आवै, मर मर किस मे समाई ॥ ४ ॥
ये चारों मिल मतो उपायो, ज्यूँ अन्धले कूँ हाथी।
जनम पिता का कैसे पाया, पूत न होता साथी ॥ ५ ॥
सत्त पदारथ सब से न्यारा, विरला जाणे कोई।
कहे मछन्दर सत गुरु की सैणा, आप मिट्या सै होई ॥ ६ ॥
दुवध्या कहाँ से आई साधो, दुवध्या कहाँ से आई०।
(आयस मेघनाथजी जोधपुर से)

—:*:—

सत सत भापे गोरप जोगी, हम तुम रहिवा रंगु।
अलप पुरुप हम गुरु मुख चीन्ह्या, ताकै रहिवा संगु ॥टेक॥
सत जुग मध्य मत एक रचीला, विसहर एक उपाया।
ज्ञान विहूणा कंद्रप जोगी, सब ही डसी डसी खाया ॥ १ ॥
तेता जुग मत दोय रचीला, राम रसायण कीन्हा।
नर वानर दल लडि लडि मूवा, तिन हूँ ज्ञान न चीन्हा ॥ २ ॥
द्वापर-जुग मत तीन रचीला, वोहडी वर वोह भारं।
केरूँ पाण्डूं लडि लडि मूवा, नारद किया सीघारं ॥ ३ ॥
कलि जुग मध्य मत चार रचीला, चूकीला आचारूं।
घरि घरि नादी घरि घरि वादी, घरि घरि कथणा हारूं ॥ ४ ॥
चहूँ जुगां मत च्यारि रचीला, ज्ञान निरालम्ब रहिया।
मछयन्द्र प्रसादे जति गोरष वोल्या, विरला जन निरवहिया ॥ ५ ॥
सत सत भापै गोरप जोगी, हम तुम रहिवा रंगु०।
(पुस्तक प्रकाश जोधपुर से)

—:*:—

हमारे घर आवो कृष्ण मुरारी, हमारे घर आवो संत दिदारी ।
साँचे गुराँ दे आज्ञा कारी, हमारे अंगना पधारो श्याम मुरारी ॥टेक॥
ईसर नाथ सकल जुग नाथ्यो, मेर मेदिनी सारी ।
सनकादिक ब्रह्मादिक सुमरे, सुमरे पवनाहीरी ॥ १ ॥
वोही रामने रावण मार्‌यो, पत्थर अहिल्या तारी ।
गढ कैलास से उतरे हनुमत जोधा, छिन में लंका जारी ॥ २ ॥
हरिचंद नगरी गगन में भूले, पाण्डवाँ दी क्रिया भारी ।
कैरव मार भसम कर दीनी, येही सगत तुम्हारी ॥ ३ ॥
वोही कृष्ण जिन कंस पछाड्यो, सुमरे नर अर नारी ।
पैठ पताल कालिंगो नाथ्यो, ऊपर करी असवारी ॥ ३ ॥
पापी पखण्डि सिर परलो आवसी, कुड़ियाँ सिर पत्थर भारी ।
निर्भय नाथ कहै कर जोडी, हम पर दया तुम्हारी ॥ ४ ॥
हमारे घर आवो कृष्ण मुरारी, हमारे घर आवो सन्त दिदारी ।
साँचे गुराँ जिरे आज्ञाकारी, हमारे अंगना पधारो श्याम मुरार ॥
(मिश्राईनाथ जी अमृतसर से)

—:॰:—

सिद्धों की भविष्यद्वाणी

हिदा का भाव हात सूं देखै, यह कलि आई झूठी ।
गोरष कहै सुनो रे पूता, करवै होय सो निकसे टूटी ॥

दया धर्म सत चित न वसै, अतीत देखि निन्दा मन हसै ।
कथै ज्ञान फोकट की रहनी, चरपट कहै कलुकै चिहनी ॥

जोगी जोगी कि पुछै न वात. आपा रेतै करे विषाद।
कलि मैं जोगी रोग वटोरा, पंडित पढिया कोरम कोरा ॥

गवरी रो नन्द गणेश, ज्यांरी आगम वाणी ॥ टेक ॥
ऐसा ऐसा पवना चालसे, हिमाला उडाणी ॥ १ ॥
ऐसा ऐसा जल चढसे, पृथ्वी डूबी जाणी ॥ २ ॥
सात समुद्र इक खुअडा खजसे, जिमे इन्द्र भरे जल पाणी ॥ ३ ॥
गोरप नाथ मछिन्द्री पूता, खोज करो हिय वाणी ॥ ४ ॥
गवरी रो नन्द गणेश, ज्यांरी आगम वाणी ॥ टेक ॥

—:o:—

१

संकट काटो माता सारदा, साची माता सारदा ॥ टेक ॥
सिंह चढ़ी माता गर्जनी, हंसे चढ़ी हिंगलाज।
सांत पहर सातां दीप में, एक पहर हिंगलाज ॥ १ ॥
सवा लख पीर सकले वसे, जहीं मैं औघड़ पीर।
चौसठ जोगण संग रमें, खेले बावन वीर ॥ २ ॥
धजा झूलशे साधो सिन्ध में, वाजे अनहद तूर।
विजया पडशे मैदान में, वचे औरां को सूर ॥ ३ ॥
चौदड़े मेड़ो मेड़से, पंचो करो पुकार।
लीले घोड़े नर चालशे, वोहि वर वोहि असवार ॥ ४ ॥
पीर पेशौरी नाथ वोलिया, मैया मैं शरण तिहारो।
शरण पड़े की लाज राखजो, राखो पत भगवारो ॥ ५ ॥
संकट काटो माता सारदा, साची माता सारदा ॥ टेक ॥

२

इहो अथव अगम, पर व्यावी घणा, आहे अगमरो उलखाण ॥टेक॥
थर थर कम्पे मेरी मेघली, भोम सहे नहि भार ।
तुरी नरवो पधार शे, घोडले चढ़ सोई कलतार ॥ १ ॥
जात कुजात न जाण सन्, चलसन् वेजातियां री वान ।
गो-ब्राह्मण दोनों नहि मानसन्, राजा भया वेजवान ॥ २ ॥
हिन्दु न मानसन् पुस्तक पोथियाँ, मुसलमान माने न कुरान ।
हिन्दु न जासन् द्वारका, मके न जासन् मुसलमान ॥ ३ ॥
जोगी करसन् खेतियाँ, सन्यासी व्यापार ।
इवें कर दर्मड़ा मेडसन्, जासन् राज दुआर ॥ ४ ॥
गढ़ दिल्ली सूं दल जो चढ़शे, कलिंगड़ो मारशे मुलतान ।
मच्छेन्द्र प्रतापे जति गोरख वोल्या, आगमरो उलखान ॥ ५ ॥
इहो अथव अगम पर व्यावि घणा, आहे अगमरो हुलखाण ॥टेक॥
(हुकमतमल सिन्धी रामबाग कानपुर से ३)

१

रैसी ओ रैसी म्हारो अलख निरंजन । सब जुग चालण हारे ॥टेक॥
कनक छोला तां गिन गिन विकैंगे । कांटे तोलेंगे जल पानी ॥ १ ॥
टके टके मै मरद विकैंगे । दमड़ी की दो नारी ॥ २ ॥
ताम्बे वरणी धरती तपेगी । सूर्ज तपैंगे असमाना ॥ ३ ॥
गंगा जमुना गुपत वगेगी । छीलडिये जलपानी ॥ ४ ॥
कहे मच्छन्दर सुण जति गोरष । कलि जुग के भरतारे ॥ ५ ॥
रैसी ओ रैसी म्हारो अलख निरंजन । सब जुग चालण हारे ॥टेक॥

—:०:—

तेरे तन की खवर न रहेगी । इक दिन ऐसी हवा चलेगी ॥ टेक ॥
टके टके में टट्टू विकेगा । दमडी की दो दो नारी ॥ १ ॥
समुंदर नीर खुटेगा । समुंदर भिरना खूदेगी ॥ २ ॥
गवूं रे चना तो गिनमा विकेगा । टांके नीर तुलेगा ॥ ३ ॥
गंगा जमुना गुप्त वहेगी । त्रिवेनी आन मिलेगी ॥ ४ ॥
शरण मछन्दर जति गोरप बोले । सुध बुध कछु न रहेगी ॥ ५ ॥
अवधू ऐसी हवा चलेगी । तेरे तन की खवर न रहेगी ।
इक दिन ऐसी हवा चलेगी ॥ टेक ॥

(नन्दगिरि देवनगर दिल्ली से २)

—:o:—

ब्रह्मा बैठो मछली जो मारे । जीवांरो वेद विचारो ।
शंभुनाथ गोरप धन्दा जुग रचंदा । गुरु ज्ञान विचारो ॥ टेक ॥
पंच जणा रे एक जो मछली । छठवों सरजण हारो ॥ १ ॥
पूफिरे मासी भेण माणिजी । चौवांरो एक भतारो ॥ ३ ॥
लांकिड वूडे लोहा तारे । विनु खुटिये जग छारो ॥ ४ ॥
कहत गोरपनाथ सुनो गत गंगा । करणी रो फल सारो ॥ ५ ॥
शंभुनाथ गोरप धन्धा जुग रचंदा । गुरु ज्ञान विचारो ॥ टेक ॥

(पोपटमल खपरगञ्ज से)

—:o:—(१)

उगता भान से लडशे कालंगडो । मेरा भाइरां से वाजी मत रोप
रे कालंगडा लंका में हुई जैसी फेन्यों वि होसी ॥ टेर ॥
ताम्बा वरणी धरती वणेली, जिमे लोहांरी लाट गिरेली ।
राघो वाघो घाणी कै जुपेला जिमे कपटियाँ रो तेल कढेली ॥ १ ॥
गंगा जमुना में धूल उडेली । समुदर मे वैन्यां खुदेली ॥
गिणवातो गिणवा चणुला विकेली । टांकामे तुलेला जल पानी ॥ २ ॥

दिल्ली दक्षिण बाजार मण्डेला। लोंहारी लीक गिरेली ॥
तेरे बरस की पुतर जनमसी! तीसा मे पार पडेली ॥ ३ ॥
सवा नेजां पर सूरज उगेला। निगुरा खद बद सीजेला ॥
मछन्द्र सरणे जति गोरख बोल्या। जिण खोज्या तिण तोल्या ॥ ४ ॥
उगता भान से लडशे कालंगडो। मेरा भाईरां से बाजी मत रोप
रे कलिंगडा लंकामें हुई जैसी फेरयों विहोसी ॥ टेक ॥

—:०:—(२)

गूथ ल्याई मालण मोड कंगण तिलक तोरण सेवरो, पृथ्वी रो
पालण आवशे सन्तांने तारण आवशे। सही आलम आवशे ॥टेर॥

अगम रा ग्यान पहुच्या पश्चिम रा दल आवशे।
सेत घोडला सेत तम्बू सही निकलंक आवशे ॥ १ ॥
दिल्ली दक्षिण एक होसी। होसी एकोङ्कार जी ॥
हिन्दु तुरकां एक प्याले। भाग जासी भ्रांत जी ॥ २ ॥
चितोड चौरी दिल्ली डेरा। गुदडी होसी बजार जी ॥
हनुवन्त झण्डा रोपसी। होसी जै जै कार जी ॥ ३ ॥
हरिया तोरण तारा मण्डप। चौरी रतन जडावसी।
मेघणी पर दया करसी। सही आलम आवसी ॥ ४ ॥
गोरष ज्ञान गरीबी बोले। सभी भेष बुलासी ॥
नेम के घर पाव धरसी। सिंगी नाद बजावसी ॥ ५ ॥
गूंथ ल्याई मालण मोडकंगण तिलक तोरण सेवरो।
पृथ्वी रो पालण आवशे सन्ताने तारण आवशे ॥
दुष्टाने मारण आवशे। सही आलम आवशे ॥टेक॥

(गौरीनाथ जी जयपुर से २)

—:०:—

तुम हक हालो तुहिं जो, मेलो गढ़ मुलतान।
देखो सेतले हसवार जी ॥ टेक ॥

सेतले घोडे म्हारो श्याम चढ़शे पांच पांडव अगवान।
पीर पछिम दल आवशे मेलो गढ़ मुलतान ॥ १ ॥
अंजनी रे खेत माही वाजा जो वाजशे, असुरा नूं पढ़ शे मार।
राज ऋषि घर आवशे जुग चौथेरो अवतार ॥ २ ॥
सिंह वाहिनी शारदा माता चौसठ जोगनि साथ।
देवी चक्कर चलावशे, खप्पर लीनो हाथ ॥ ३ ॥
ब्रह्मा वेद जो वाचशे, चौवीस फेरा चार।
कायम परण शे मेवली, कली दसवो अवतार ॥ ४ ॥
हसपुर बगपुर श्यामपुर, चौथा गढ़ मुलतान।
पंजवां फेर वसावशे, अहिल्यापुर मुलतान ॥ ५ ॥
सीता कुन्ती द्रोपदी, चौथी हरिचन्दनार।
गावन थारा शोहरा, मोर मुकुट गलहार ॥ ६ ॥
वैन घरावशे फेर आवशे, होवशे आप हसवार।
पीर नदीनाथ बोलिया, आगम केरि विचार ॥ ७ ॥
तुम हक हालो तुहिजो, मेलो गढ़ मुलतान।
देखो सेतले हसवार जी ॥ टेक ॥

(स्वामी प्रयाग भारती जी दिल्ली से)

—:०:—(१)

सत गुरु अगम कोट रे वासी, पुरा गुरु वेगम गढ रे वासी।
परवत उपर गुफा रचाई, ता मै जाय समासी।
सत गुरु जोत मैं जोत मिलासी ॥
पुरा गुरु वेगम गढ़ रे वासी ॥ टेक ॥

सिंग सियार में व्याधि व्यापै सौ सौ धिक्का खासी।
विलाव पांच पचीसी खैले अम्बर धरण विगासी।
सत गुरु अदभुत कौतुक थासी ॥ १ ॥
हंसा मौन पुरी में रैसी, सारस जल विन प्यासी।
चील जो चेतन पेच मरोड़े, वाज झपाटा लासी
सत गुरु उडी अचानक आसी ॥ २ ॥
अकड़ा मकड़ा भेडा वकरा, ताकेरा धागा काती
गुदड़ी वनैगी सवकी साजी क्या नीकी क्या फाटी।
सत गुरु क्या सेती क्या राती ॥ ३ ॥
वांध तूटै जव पानी फूटै मछलियां के गल फांसी।
मल्लीनाथ अव विन सत गुरुके पड़ी रात पर राती,
सत गुरु नहिं दीप नहिं वाती पुरा गुरु० ॥ ४ ॥

—○०○— (२)

उभा रहि अरजन परिखिहु अरजन,
सीध केरी पारखा जुग जुग होवन ॥ टेक ॥
कलि जुग जावणा सति जुग आवणा,
सीध र साधकेरा मेल मिलावणा ॥ १ ॥
अम्वर ऊपर सीस चढ़ैगी,
समंद भीतरि भीत उभैगी ॥ २ ॥
असत्थाम केरा असत्र चलैगा।
चक मक अगनी वाण वलैगा ॥ ३ ॥
रावल जोगी रण मैं गजैगा।
भरत पुरी का डंक वजैगा ॥ ४ ॥
सतरी वाचा आन फिरैगी।
सार की खिचड़ी तदूं सिजैगी ॥ ५ ॥

मच्छन्द्र प्रतापे जति गोरख बोलै।
सब जग एकौंकार बिरौले॥ ६॥

उभा रहि अरजन परिखिहु अरजन।
सिध केरी पारख, जुग जुग होवंन।

(लखमीचन्द आहुजा वम्बई से २)

—:०:*:०:—

असंख संखान मध्ये अनुपान शीला।
ज्याँ वैठे श्री शंभु जति गुरु गोरषनाथ वाला॥

अखण्ड मण्डले व्यापलौ सर्वचराचर थापलौ।
चौरासी लाख जीवा जून कूँ चारा पानी चुगायलौ॥

छदम छल का दर्शन होवैगा, जति सती कोई विरला रहैगा।
चन्द्र से जोगी गुप्त रहैंगे, शवद का परचा हाथ धरैंगे॥

धुन्दी जोगी छेतर मेला हत्यार वाण चलावैंगे।
शब्द कूँ न भेदैंगे गुरा कूँ न मानैंगे॥

संसार का भार ले सिराणे धरैंगे।
गुरां का नाम ले दोजग भरैंगे॥

कहता हूँ सुनता हूँ देता हूँ हेला।
गुरु की करणी गुरु जायगा चेले की करणी चेला॥

छोटा घर मोटा दरवाजा, प्रजा लोभी त लालची राजा।
छोटा होय कर करे वड़ाई, मोटा होय कर करे मन्दाई॥

धुन्ध वाद जोगी का मेला, ता कारण गुरु गोरषनाथ फिरैं अकेला।
गंगा गोदावरी त्रिमुख छेत्र, ज्यां भरिया सिद्ध साध का पत्र,
पटदर्शन छतीस पाखण्ड, सोने की मुद्रा रूपे का नाद॥
पाटकी मेखली छींटकी झोली, वाहरि टिम टिमी भीतरि पोली।

सुणो सिद्धो ! श्री नाथ जी की वाणी, सब कोई बैठा तमोटी ताणी ॥
क्या है गोरख क्या है अकला, आप ही आप कूँ भाखैगे भला ॥
इत्यादि········ ॥ (मनसा गायत्री से)

संत महन्त बनैंगे भारा, पोथी पतरी बहुविस्तारा।
बाकर कूकर साथ फिरैंगे, भाट भट्ट सो आगे करेंगे ॥
आप आप कूँ भाखैं उच्चा, योग पुरुष कूँ कहैंगे लुच्चा।
जोग न जानें जुगत कथैंगे, ज्ञानी होय कर भग सुक्तैंगे ॥
नाथ होय कर करें मन्दाई, झूठ बात का भरें गवाई।
दास होय भगवा पहनैंगे, नाथ नन्द कर नाम धरेंगे ॥
पोथी कै बल गुरु कै गुरु कहावैंगे ॥
गुणिया कढ़िया एक न, धुन्द वाद मचावैंगे।
जात छोड़ बेजात मैं, अपना नाम धरावैंगे ॥
कछु अपनी कछु और की, कथनी कथी कछु होर।
गुरु विहूणा पंथिया, पंथ चलेगा चोर ॥
उलट पुलट कलु कालका, गोरख धन्दा जान।
अपने स्वारथ कै वस, पडैंगी खैंचातान ॥
नहीं सोयं नहि कोयं नहि यूयं न सोधयं।
खिचड़ी खचड़ी खा चडी रोदनं नहि सोभयं ॥
राजा प्रजा जात लुकोई, धर्म कर्म की विधी न कोई।
गोरख नाम धरैंगे जोगी, क्या रोगी क्या विषया भोगी ॥
उथल पुथल तब अनरथ होई, धर अम्बर मैं सीम खडोई।
तब श्री नाथ का आदेश जगैगा, भैरव जती का डंक बजैगा ॥
जम्बूदीप में हिलोड मचैगा ॥

काली खप्पर हाथ धरैगी, विन खुटिये मख लूक मरैगी।
वार कोश पर दिया जगैगा, सतूकाल तदूं वरतैगा॥
पथ मैं पथक मिलैंगे कैसे, विछूड़े पूत मिले कै जैसे।
जदूं पावणा घरमैं आवें, पूजन कर विधि भोज करावै॥
सिद्ध पुरुष तव आन मिलैंगे, जोग जुगुत की वातां कहैंगे।
सव वरणन की सीम धरैंगे, धर्म कर्म विधि नेम करैंगे॥

निजिया करतव कर्म का, पालैंगे सव नेम।
फलै फूलैगी धरतरी, सत गुर जी रा सेन॥

लक्ष्मण (सिद्धबालकनाथ) कुण्डली

जटा जूट असंख्या नाम जती कथैये लछुमना।
सुणो राजा रामचन्द्र आपा राखौ जितौ मना॥
अग्नि सरूपी समो नारी धृत सरूपी समो नरा।
तपश्चारी व्रत हारी जोग जुक्ती विधि करा॥
माता जाकी शीलवन्ती पिता सत सत भाषते।
तास पुत्र भये जोगी अष्टोत्तर कुल तारते॥
माता जाकी लिष्टं पिष्टं पिता वरण संकरा।
तास पुत्र भये जोगी धुन्दी वादी तसकरा॥
कहो त गुरु जी दिन पलटूं कहो त खांचूं माया।
कहो त पवना पानी पलटूं कहो त पलटूं जाया॥
काहे को लछुमण दिन पलटै काहे को खांचै माया।
काहे को पवणा पानी पलटै काहे को पलटै जाया॥
आपै आप धुन्द मचैगा हुकम गुरां का आया।
अपणी कीति आप भोगैंगे करणी का फल पाया॥

तब रजपूत होय हल खेडैंगे तपसी माण्डैंगे हाटा।
सूदर होय एकादशी बरतै ब्राह्मण मारैंगे वाटा॥

तब श्री नाथ का तपो तपैगा मुनिमन भाव न फलनी।
आतम हीना बुद्धि मलीना अन्ध धुन्ध की करनी॥

मात महेली पुतर भरतार सिष्ठी रचलौ एकों कार।
तब लूटैंगी प्रथमी कंपैगा संसार।
सात बरस की कनियां थांवैगी घर वार॥

तव नदी नालेका नीर सुकैगा कूप वाव अर ताल।
गंगा जी का वहकड़ा जाय सप्तमे पाताल॥
पूत न जानै माई न वाप, सबसे ऊचा आपो आप।

देवल देख देवल गढ़कै राजा देख रङ्क वासंग।
धूता धूती गुरु चेलै का होय वाद विवादंग॥
होवई पिण होवसी आई हो वैसी खरिवुवारंग॥

देवल देख देवल गसैगा दिल्ली देख सुनारं।
खैंचा तानी रात विहाई जाका वार न पारं॥

जम्बूदीप में हिलोड मचैगा कोइ न सिद्धो बरजण हारं।
अलख लेख दोय हिकमत जाणे ऐसा होय विचारं॥

पहले बूड़िया ब्राह्मणा पीछे वणियां पूत।
जोग विहूणा जोगिया कोट वावर अवधूत॥

पौरा आया सांई का धर्ती मांगे भोग।
कित्यानै खड़गसिंहारै कित्यानै व्यापै रोग॥

तव दिल्ली के द्वार पै होवै साज सिंगार।
चौसठ जोगण गावहीं धौल मंगला चार॥

आप आपणै होयगी धाकम धीकम पाय।
दिल्ली राजा राज पुर वसै परयाग मैं जाय॥

झाड़ झपड़ कर फेर विछावैं दिल्ली ग्यारमी वार।
गुपत का माल प्रकट मगावैं फेर न होवै हार॥

नव लख सींगी नाद वजैगा, तीसा हजारी धाम जगैगा॥
वाल जति गुरु गोरख जगैगा सील सन्तोपी आन मिलैगा॥
वार कोस पर दीया जगैगा, तव सिद्धो सत जुग वरतैगा।

मनले प्रवनले ज्ञान काया थामले।
हम परचे निर्वाणी जोगी अजर बूंद काया होमले।

आवागवण निवारिलैं..................।
रहत काया का संग रचलैं, शब्द गुरां का वाण॥

पटण मनारा थाण हमारा अधक तंत ल्यौ लाई।
नित उठ जूझैं काल गरुड सौं देखो चेतन की चतुराई॥

असंख जुग मध्ये जोगी फिरै मलंगा।
कनक काया कामणी कै संगा॥
हंस हंस राखौ मन का भाव, दिढ करि राखौ काया का राव।
ज्ञान कछोटी वांधो कस, पंच आत्मा,

राखो 'सिद्धो श्री नाथ गुरु कै' वस॥

दसमै द्वार वहावौ वाण, वरमै चोर न दीजै जाण।
राम पुछै लच्मण कहै, जोगी हुवै तो दीछ्या रहै॥

उलटा वाण गगन कूंताण, अन्दर चोर न दीजै जाण।
राम पुछै लछमण कहै, जोगी हुवै तौ लछ्या रहै॥

इतनीक लिछमण कुण्डली गोरप टिलैपर
श्री नाथ जी ने नवनाथ चौरासी सिद्धा नै
सुणाया,चार घडी रहै तरे औ ज्ञान पढणौ॥

(स्वर्गवासी मोहरनाथ जी हरद्वार से)

यह लदमण कुण्डली प्रायः सर्व योगेश्वरों को कण्ठस्थ है, परन्तु पाठ भेद अधिक हैं। प्रत्येक में कोई न कोई अल्पता, अधिकता, पाई जाती है, किन्तु सारांश में कोई भेद नहीं है उदाहरण के लिये एक और पढ़ियें—

जटा जूट प्रसंख्या नाम जति कथे लक्षमणा माता जाकी सीलवन्ती पिता सुत वकन्ता ताके पुत्तर ऐसे जन्मते जोगी होते जोगारंभको सुधरन्ते अष्टोत्तर कुल लै तरन्ते ॥ माता जिनकी लिष्ट पिष्ट पिता वरण संकरे, ताके पुत्तर ऐसे जन्मते धुन्धी वादी तस्तकरा मुस्करे। कहें तो गुरुजी दिन पलट्टूँ कहें तो खीचूँ माया। काहे कूँ लछमण दीन पलटै काहे कूँ खीचै माया। आपै आप धुन्ध मचेगा हुकुम गुरां का आया। अटके अटके घोड़ा चलेंगे पीछे पीछे नारां। जति सती कोई विरला होवेगा होवेंगे घर वारी संसारी तथा लोभी हंकारी। कितियाने कटकि संहारे, कितियाने खासी कीड़ा रोग। दरशनी तो करपणी होंगे, राजे होंगे हाली। तपी मण्डेंगे हाट, बामण मारेंगे चार पहर का वाट। सूदर राखेंगे एकादशी, धोबी दे घर कपला गौ, सात बरस की क्वारी कन्या ठानेगी घरबार, सफेद घोडा सफेद पलाण, जिसते चढे अलख पुरुष निरवाण, इन्दर तो अलप बरसेंगे, नदी नाले का नीर सुखा जायगा, गंगा जमुना सुखकर सातवें पाताल वगेगी। देवल देख देवल धसैंगे, मसीत देख मनारा। सिंगला द्वीप में हुलल मचेगा कोइ न रहेगा वरजणहारा। अकल वो वडी बामणी दिल्ली का तखत भाड पछाड–फेर बिछावेंगे। हींगलाज महा माई के भी खप्पर भरेंगी। जदों पोरा आवेगा साईं का सार के चने चवायेंगे॥ इतना लछमण कुण्डली सम्पूर्ण॥

(पीर समुद्रनाथजी काङ्डा से)

॥ सिद्ध[१] हरताली के वचन ॥

जम्मू दीप में हिलोड पडैगा कोइन सिद्धो वरजण हारं।
धरती अम्बर दौनो कंपै कौतुक होय अपारं॥
दरसणी ते करषणी होसी, राजा होसी हाली।
जती सती ते विरला होसी, कथंत सिद्ध हरताली॥

॥ शुक्र हंस वाक्यम् ॥

श्रीनाथाय नमः। श्रीगुरुभ्यो नमः॥

देवालयं पश्यन्तो देवालयाः कम्पिष्यन्ते, राजानं पश्यन्तोऽवरोधाः। गुरुशिष्ययोः प्रत्यक्षत एव विवादो भविष्यति। गंगा-यमुनयो नीरं नंक्ष्यति, द्वादशे द्वादशे योजने नगर्यो निवसिष्यन्ति। आमलकप्रमाणभिक्षा भविष्यति। यतिः सत्यवादी च कोऽपि विरलः स्थास्यति। यदा च मही तापं यास्यति कूर्मोऽपि विचलिष्यति, नाशं यास्यति क्षत्रियाणां नृपाणां बीजम्। सूर्याचन्द्रौ राहु ग्रहिष्यति तदा जानीहि पुत्र! न दिवसो न रात्रि-रिति उत्तरदिशातः सार्ध-कोटि-त्रय-संख्याका सेना समायास्यति। राज्ञां न चास्ति पारावारः। इन्द्रो राजा न वर्सिष्यति। यत आसनानि कम्पिष्यन्ति, सिद्धा बुध्या विचारं करिष्यन्ति। विरलं विचारं करिष्यन्तो गिरिकन्दरासु प्रवेक्ष्यन्ति। शुक्रो हंस एवं भाषते, चित्तं चैतन्येन समी कृत्य मेलनीयं, यत उड्डीय न गमिष्यति परमो हंस इति॥ इति शुक्रहंसवाक्यम्॥ (पुस्तक प्रकाश जोधपुर से)

---

१ सुनने में आता है कि इनकी भविष्यवाणी बहुत हैं। परन्तु अप्राप्त हैं।

सत जुग सभा जोयले रे, चार वेद सत सोयी।
निरमल नाम निरंजन बोले, नूर झलकता मांयी॥
कलजुग सभा जोय ले, पलक पलक में वैर।
मिल मिल मीठा बोलता, परगट पावे जेर॥
ऊली पेली वात चलावे, कर भगती सूं वेर।
कूड कपट करी करे चाकरी, ये कलजुगरी लेर॥
एक विजेरी करे बुराई, कलु काल विस्तार।
मात पिता ने सुत समझावे, प्यारी लगे नार॥
वाला जोगी नाम धरावें, वात करे उर चंगी।
विन रैहणी प्रमोद लगावे, जैसा देखो भंगी॥
पाप आवे पाप जावे, पापीयां के पेट में, पाप ही परतु है।
गुरां की खबर नहीं, फिरत जगत माही, निंदा ही करतु है॥
जीवता ओगत भुत, अन्त आवे जमदुत, कुकरा करतु है।
कलिजुग ऐसा खेल, हरि की कीरत देख, पाप ही धरतु है।
रामनाथ कहे वात, ऐसा तो संसार खर, नरक में परतु है॥
(सिद्धसागर से)

श्रीवीरभद्र की वाणी (१)

रंग राग वागन ठट्टियं, घनघोर सोर प्रगट्टियं।
लंबी असी गज सज्जयं, पचास चौडिय गज्जयं॥
दस गज सुदल परमानयं, तिहि गुफाखुली अमानयं।
रुद्राक्ष मुद्रा धारयं, मुख शंभु शंभु उच्चारयं॥
कर खड्ग खप्पर राखयं, मुख शंभु शंभु भाखयं।
पृथ्वी राज कीन प्रणामयं, वोल्यो न वीर सत्तामयं॥

तहां देव राज समरसी, छड्योन राज रघुवंसी।
पूछत चंद सुवत्तियं, कहा होनहार स कथ्थियं॥
यह होनहार स होय है, दिल्ली न थिरता सोय है।
पुन मलेच्छ दल वल जोर है, अर सहर दिल्लिय तोर है॥
पृथ्वीराज जुद्ध न जीत है, रण समे रावल वीत है।
चावण्ड राय गुरु रींमहीं, कट परहि भारत कामही॥

पृथ्वीराज वंध ही पावही, षट मास विपद विहावही।
नृप, साह, चंद रु तीनयं, रहे इकि ठौर सुलीनयं॥
गोरी दिल्लिय आनयं, पुनिवरते हिन्दुस्तानयं।
तिहि दुर्ग देवल भाज्जयं, अति अनरथ्थ स साजयं॥

वरते वूरसां दोय से, तापीछे चकत्ता आवसे।
हिन्दवान दण्ड भरावही, नृप घर घर धिय व्यावही॥
दखनाद सुदल आवही, तिहि तखत दिल्लिय न पावही।
तापीछे टोपी आवही, वहु इलम कलम चलावहीं॥

नारी सुराजा वज्जसी, हिन्दु तुरक सव भज्जसी।
इह तखत दिल्लिय आवही, नृप घर घर सुख पावही॥
वह धर्म राज जमावही, प्रति पाल न्याय कहावही।
जव न्याय वंधन छुट्टसी, तव आप पेटा फुट्टसी॥

मिलि वलख कावुल थट्टियं, त्रिजोस भूपत भट्टियं।
विध्वंस दिल्ली पावय्यं, रही वरस षट पर नाठयं॥
सीसोध दिल्ली आवही, सिर राण छत्र धरावही।
पेतीस वरस प्रमानही, भोगवे हिन्दुस्तानही॥

अजमेर पीर सुजग्गही, पुनि तखत दिल्लिय मग्गही।
तुवर दिल्लीय घेरही, पुनि आण दिल्ली फेर ही॥
राठोड दिल्ली आवही, धरम नीत चलावही।

दोहा—वीरभद्रके वचन सुन, लग्यो सोच चोहान।
महावीर दृढ ग्यान को, वोल्यो तव बलवान॥

छंद तोटक

नृप सोच न क़ीजिय काहुन को,
भुगते जन भव्य सुख दुख को।
वसुधा किनके घर नाहि रई,
पुनि केतिक वार उथल्लगई॥
नृप वेनन की भई ना धरनी,
कर वास विसंभर ही करनी।
सुरराज जिसे न भई उनकी,
घर नाहि रही हिरनाकुस की॥
बल की न हुई जिय जग्ग किये,
तिन वामन बाँध पताल दिये।
धरनी धरनी भई मान न की,
थिर वास करे न भई उन की।
पृथुराज अवतार भये हरके।
थिर नाहि रहि उनकी धरके।
दुजराज वडेन हुई उनकी॥
फिर मान चलइ किन वागन की॥
हठ राम स पसु इकीस करी,
वसुधा न रही सुउथल्ल परी॥
पत मोर वंध्यो सिर रावन को,
जिन ध्यान कियो है सदाशिव को॥

तिनसू तजि प्रीत खरी विसरी।
रघुनाथ लही अपनी सुकरी।
प्रभु तीनहि लोक उपावन के।
रघुराम तिसे न हुई उनके॥
दुरजोधन जोध वड़े जवरे,
तिन से अरजून संग्राम भरे।
कुल, भारत, छोन अठार जुटे,
उनके घर से गई भूमि छुटे॥
रन खेत लरंत मरंत अति।
तिन को वल लक्ष मही धरती।
रन खेत विचार लहै जवही।
रज वट्ट को नीर रहै तवही॥
दोहा—वीर भद्र कहि ये कथा, वैठ गयो इह कान।
फिर सीला सिर पर धरी, लग्यो हेत शिवध्यान॥
(रामगोपाल गिरदीकोट जोधपुर से)

अथ वीरभद्र रासो लिषन्ते (२)

छन्द उदो

रंग राग वीगसो थट्टियं। घन घोर शोर प्रगटीयं॥
सुति अल्पनींद सो जागियं। साल उलट पुलट सो पेखियं॥
पचास चोडी प्रमानियं। दस गज दल प्रजानियं॥
प्रतक्ष वीर सो पेखियं। सम्रू राज रावल देखियं॥
भस्मी अंग मुद्रा कानियं। वत्तीस लम्वो होय सिर—
जटा मुकट सो धारियं॥
मुख शंभु शंभु उचारियं। कर खड्ग खपर राखियं॥

मुख शंभु शंभु भाखियं। पृथ्वीराज कीन प्रमानियं॥
पूछत चन्द सो जानियं। कह्यो होनहार प्रमानियं॥
वोल्यो सो वीर प्रमानियं।
तहाँ कहो रावल समरसी। हमें काज कैसो होवसी॥
अवतार रावल ईशयी। कहो वीर हो रण सीसयी॥
कहो वीर सुन तुम कौन है। यह वरत हिन्दुस्थान में।
यह होन हार सो होवही। द्रिल्ली न थिरता सोवही॥
पुनि मलेच्छ वंश जोर है। यह सरे दिल्ली तोर है॥
पृथ्वीराज न जुध जीतही। रण सम रावल वीत ही॥
चामुण्ड रा गुरु राम ही। खट परयो भारत काम ही॥
पृथ्वीराज वन्धंन पावही। पट् मास विपत वितावही॥
गोरी सो दिल्ली आवही।
नृप चंद अरु पति शाहियं। यह तीन एक सम वीतियं॥
कर राज रेन कवारियं। तव तखत गोरी धारियं॥
यह सप्त वर्ष प्रमानियं। यह दुरंग देवल भजियं॥
अति आन अनरथ सजियं। वह गुसे हुकुम चलाइयं॥
ता पीछे चिकता आवही। तीन वंश मुगल कहावही॥
कर राज वरसो दोय सो। थिरता न पदमन सोह सो॥
हिन्दमान डंड भरावही। नृप घर घरे धी व्यावही॥
तहाँ समेत नृप दुख पावही। तहा राज उठे उतपात ही॥
सव राज रस वस जाव ही। दिखणादसो तव दल आवही
तव हिन्दु डंड भरावही। उतरादसो दल आवही॥
तुरकान मार हटावही। वीरता फिरंगी जरियं॥
विदुस दिल्ली पारियं। ता पीछे टोपी सानियं॥
सो वरत हिन्दुस्तानियं। वह इलम कलम चलावही॥
नारी सो राजा वजसी। हिन्दु तुरक सव मिल भजसी॥

यह तखत दिल्ली आवही। नृप घर घरे सुख पावही ॥
वा धरम राज चलावही। प्रति पाल नाव करावही ॥
तव नाव बन्धन छुटसी। तव आय पेटा फुटसी ॥
पट अष्ट वर्ष प्रमानियं। हिन्दमान मिल घर लुटियं ॥
तहां हुकुम फौज न मानियं। उतराद सो दल आवही ॥
फिरंगीने मार हटावही ॥
कर राज हिन्दु जरियं। विदुस दिल्ली पटियं ॥
पेतीस वरष प्रमानियं। तहां जोग हो सो जानियं ॥
तहाँ फौज हुकुम न मानियं। सिसोद दिल्ली आवही।
सिर राणा छत्र धरावही ॥ भूआन वरत अखंडियं।
तुरकान धर्म हटावही। अजमेर अमल उठावही ॥
वही ठोरे पीर प्रगटियं। सिसोद से घर तुटियं ॥
वतीस वरष सो साख है।
पृथ्वी उदंमल उठियं। मिल वलक काबुल थटियं ॥
जिन संग फौरेम भरियं। पचास वरष सो साख है।
चहुँ व र ना व र ह रे ही त व हु व र दिल्ली घेरही।
पट सहस्र वरष विनासियं। पमार राज प्रकाशियं ॥
आप विरोधी होवही। व ह क व री रा ज सो ह व ही ॥
तव सवल दिल्ली घेरही। कमधजा आन सो फेरही ॥
होय राज गज हथ वन्ध के। ज्यों राज हक जय चन्द के ॥
वी सों वरष सों साख है। दिल्ली न थिरता रि स है ॥
यह चौमी अ क त क वारि यं। अनेक वर सिर धारियं ॥
कहे वीर भद्र सो गलियं। कही वार चौसी उथलियं ॥
यह रसे ब्रह्मां जानियं। गिर मेर अटल पर मानियं ॥
(राजस्थान वीकानेर राजगुरु नवलनाथ पुस्तकालय
हस्तलिखित प्राचीन पुस्तक से)

जोधपुर कुडीथली के आयसजी ने २००५ वि० में जीवित समाधि लेते समय कहा—

छक्क संवत सातरां, मूंगा घोड़ा ऊठ।
मूसा होसी मुलक में, निपजेपश्चिम खूट ॥ १ ॥
सातो जातो देख लो, हुनर करो हजार।
रोकड़ नाना कारणे, सोनां फिरै बजार ॥ २ ॥
आठवां आना आठ है, ग्रहे जोग परवान।
वहू बछेडा डीकरा, नीवडियां निरवान ॥ ३ ॥
नवमे नाणा ना मिले, सुनजो विप्रां वात।
रुण मे रीठो वाजसी, पडे रात पर रात ॥ ४ ॥
दसों दिसा दस दूवलो, फौजां ऊठे फैल।
कै इक तेगां तूट सी, समरण रैजो पैल ॥ ५ ॥
एग्यारवों आछो घणों, निपजे चारों खूट।
सती रहे संसार में, पापी जावे खूट ॥ ६ ॥

(रामगोपाल गिरदीकोट जोधपुर से)

साधकों की भविष्यद्वाणी

गवरी रा नन्द सब दुख भंजन, खोलो मारे हिरदेरा ताला।
हरहरवाणी हिरदे आणी, रणत भँवन रिछ पाला ॥
बाब जी नजर हरामी री टाल ॥टेक॥
अरज करूँ आरोध पधारो, राज थारो विड़द सँभाल।
भूना भुना विड़द सँभाल बाबजी, संत लुम्बे थारी चाल ॥ १ ॥
भैरूँ नाथ भली कर बाबा, काशी रा कोटवाल।
लेय गुरज नन्द घर नाच्यो, बाँधी घूँघर माल ॥ २ ॥

हनुमान जोधा वलवन्ता, भगताँरा पृतपाल।
ले विडलो लंकापर चढिया, कर लंगडो ललकार ॥ ३ ॥
रामा पीर मेटदो साँसो, जीव वड़्यो मँझधार।
कावड़ मेटो सावड़ आणो, हो लीले असवार ॥ ४ ॥
शगती साँसो मेट सन्तां रो, वडा वडी कंकाल।
होय हिंगलाज हद्दक असुरानैं, सन्तांरी बाँधोपाल ॥ ५ ॥
जूजाले से चढ्यो गुसाइं, भेप टेक रिख्छ पाल।
लाजे भेप भगत दुख पावै, जदंनिवंसी भोपाल ॥ ६ ॥
कल जुग करणी मत जोय दाता, तनक न कीजै भाल।
गुरखियो लखीमू तेरो जशगावै, गोरख वाल गोपाल ॥ ७ ॥
वाव जी नजर हरामी री टाल।
वावजी नजर दुष्टां री टाल ॥
(गोपाल जी गिरदीकोट जोधपुर से)

कूडा वेताँ जनमरा कूडा, साँचा होवेताँ साखभरे।
वहीन केताँ माँगे मन भ्राँती, माता केतां मन मकर करे ॥ १ ॥
आद पंथ ओछा ते ओछा, धोरी पंथरी कौन करे।
कलिजुग में ऐसा अपराधी, मुख देख्याँ रो दोप चढ़े ॥ २ ॥
आडा पाट आडी खंभ ऊभा, वे निवे न गुराँसे निमन करे।
गादीला पाय नहीं लागे, जिकांरो सत गुरु काँय करे ॥ २ ॥
अंजणसारे नैणा नहीं सूझै, सांझ पड़े मन मकर करे।
दीवलो हाथ देव नहीं दरसे, दीसतरा नर खाडे पड़े ॥ ३ ॥
सतरा सूरा मतरा पूरा, वे साँचा रो संग करे।
हर सरणे हर जी भाटी वोलै, ज्यांरी मंछा अलख भरे ॥ ४ ॥
(दयाराम जोपी जोधपुर से)

दास तणा घर जनम लिया है, नाथ तणारी रीस करे।
यह पद अधिक मिलता है ॥

धौलो धौलो घोड़लो दलमाही दौड़शे,
कायम राजा आवशे ॥ टेक ॥
कायम तुरियो पलाणशे, मण्डशे सकलो मण्डाण ।
धरती अम्बर दोनो चालशे, आगमरो अगिवान ॥ १ ॥
सोनेरे सिंहासन धणी मोरो बेठशे, दिल्लीरो रहिमान ।
अदल से फजल चलावशे, कायम केरी परमान ॥ २ ॥
गोरख जति वो पधारशे, नव लख सिद्धियाँ हाथ ।
भैरव जति वो आवशे, चौसठ जोगनि साथ ॥ ३ ॥
क्रोड तेतीसों मेलो मेड़शे, अलखरिय दरबार ।
हणुवन्त हाँक चलावशे, कायमरिय दरबार ॥ ४ ॥
देवी त सुमरो सारदा, मैया मैं लागों थारे पाँव ।
मेहर करो माता भगवती, कर काली तू कल्याण ॥ ५ ॥
जुग चौथे कायम आवशे, साधो तुम रहना हुशियार ।
अजमल कुवर सिद्ध बोलिया, आगम केरि विचार ॥ ६ ॥
धौलो धौलो घोड़लो हलमाहि दौड़शे ।
कायम राजा आवशे ॥
(स्वा० प्रयाग भारती जी दिल्ली से)

सत वादी म्हारा श्यामरा, वेनर भेला रामेला ।
असंख जुग पहिला बिछड़िया, वांने भेला करेला ॥ टेक ॥
आग़म पांचौं पांडवां, आहा रोद रचेला ।
दल दिल्ली से उतरे, निशान घुरेला ॥ १ ॥
पहिला बड़ा बड़ बह्मना, पछे वणियां रा पूतरां ।
जुगत विहूणा जोगियो, मथुरां रा मोड़ां ॥२॥
कूडा कपटियो कामणा, भोपा ने भरडा ।
कपटी लोभी लालची, नुगुरा डूब मरेला ॥३॥

घाल घाणै में पीडसी, वांरो तेल पडेला ।
दिवलो बरे आई माता रे देवले, विरला छाण करेला ॥४॥
दमडी मै दो दो नार मिलसी, नर पैसे मै मिलेला ।
गेहूँ गेगरा गिणवा विकसी, टांका नीर तोलेला ॥५॥
आंका रे आंबा नीपजै, नीमारे निपजे दाखां ।
सांचा हरि जन लोड़सी, सामे आई हाकां ॥६॥
वन में वैठै बागली, सूठी साख भरेला ।
अगम भाखि सिद्ध रामदेव, भापि भूठ न हौयेला ॥७॥
सत वादी म्हारा स्यामरा वेनर भेला रमेला० ॥

थल मै नेजा फरहरे, नितरा घुरे निशान ।
जागो सत वादी साहेवो, भेलो गढ़ मुलतान ॥टेक॥

पिछम दिशा सूं दल आवशे, सतले मण्डे पिलान ।
होय असवार म्हारो साहेवो, असुरां करे सहार ॥१॥

भणिया पुस्तक वांच लो, हट जावे वेद कुरान ।
साईं म्हारां लेखो मांगसी, हिन्दू मुसलमान ॥२॥

साधानै सिणगारलो, चढ़ै आलम री जान ।
मोर बाँध परणीजे मेघणी, जुग चौथौ परियाण ॥३॥

साधानै अमरा पुरी ले चढै, वावो सो निर्वाण ।
उगमसिंह भाटी बोलिया, आगमरा ऐलान ॥४॥

थलमै नेजा फरहरे, नितरा घुरे निशान ।
जागो सतवादी साहेवो, भेलो गढ मुलतान ॥

(रणजीत हरिजन जोधपुर सेर)

धरती तपेला ताता तेल ज्यूं, ताम्बावरण अकाशा।
सँहसर किरण ले सूरज उगसी, कासव का वाणा ॥१॥

पापी परासी लोभी लालची, निगुरा डूब मरेला।
सदर धणी गुरु धावता, कोई कोई हंस पार तरेला ॥टेक॥

ताम्बा वरणी घाणियां, लोहा लाटां फिरेला।
फिर फिर निगुरा पीडसी, ज्यांरा तेल पढेला।
वही तेल दीवलां चढेला ॥२॥

पहिले वड़ा वड़ बाह्मणा, पीछे वणियां पूतरां।
जुगत पियाणा सारा जोगियां, पीछे भूपां भरडां ॥३॥

पवन पिच्यासी वाजसी, परवत मेर उढेला।
बारे बारे मणरा बाकलां, सौसौ मण चोखा रन्धेला ॥४॥

गेवाऊ रिडमल जोधां जागसी, जांका एक निवाला होसी।
अगम भाखी सिद्ध रामदेव, जुग चौथामे होसी ॥५॥

पापी परासी लोभी लालची, निगुरा डूब मरेला।
सदर धणी गुरु धावता, कोई कोई हंस पार तरेला ॥
(लहरीराम कचहरी रोड जोधपुर से)

अन्धा धुन्ध मचेला अवधू, ऐसा जुग वरतेला।
मात पिता की काण न राखे, कोई न राम जपेला ॥
अवधू ऐसा जुग वरतेला ॥टेक॥

मती भ्रष्ट होवेगी सबकी, भेण भाणिजी परणेला।
हंसी करेंगे धर्मनाम पर, नीच ऊच इक होवेला ॥१॥

राजा प्रजा मन मुख मूजी, पैसे न्याव विकावेला।
जिसकी लाठी तिसकी भैसी, नीबल घुल २ रोवेला ॥२॥

गंगा जल तुलसीदल लैकै, झूठी साख पुकारेला ।
द्वीपैसा लालच कै सुखमैं, अपना धर्म विगोवेला ॥३॥
एवा एवा चढत चढावै, बधत बधावै गैला ।
धरणी की तव प्यास बुझावन, धणि मोरो दलले आवेला॥४॥
वालनाथ सत गुरुजि रे वचने, रामदेव सिद्ध भापेला ।
झूठ न होय वृथा नहीं जाई, ऐसा साख रचावेला ॥५॥
अन्धा धुन्ध मचेला अवधू, ऐसा जुग वरतेला ।
मात पिता की काण न राखे, कोई न राम जपेला० ॥

(लखमीचन्द आहूजा सिन्धी से)

रामचन्द्र सीतानै कह गये, ऐसा कलजुग आवेला ।
रामचन्द्र सीतानै कह गये, ऐसा जमानो होवेला ॥टेक॥
उत्तर दिशा से वादली उलटी, ऊगूणी वरसेला ।
उसका लड़का करे हथायियां, वूढलियो हलहांकेला ॥१॥
काला वलद कन्यानै देसी, परदेशां परणावेला ।
वूढा ठाढा कछु नहि देखे, मायासे मोह लावेला ॥२॥
सासू आंगण वहू पलंगपर, देवर पिसणा पीसेला ।
ससुरा जी की काण न राखे, जेठ घूँघट काढेला ॥३॥
धोबी के घर सुरही होसी, वाह्मण अजिया पालेला ।
वाजे खंजरी उड़े तायफा, सिर पर कर्ज वढ़ावेला ॥४॥
तुलसी थाना वाहर कढावे, भीतर भाण लगावेला ।
पीवे भांग हो जावे गैला, गाफल गोता खावेला ॥५॥
गंगा जमुना ऊठ होवेला, कोई न न्हावा जावेला ।
भजन गिरी सन्यासी बोलै, करणी को फल पावेला ॥६॥

(रणजीत लाल कचहरी रोड जोधपुर से)

सति जुग में सत रहा द्वापुर त्रेता जाते आते।
मती भ्रष्ट हो गई दुनियां में गलियुग के आते २ ।।टेक।।
सत धर्म हट गया पाप छागया कलुके दर्म्याने में।
शंकर गये कैलास भवन को, विष्णु गये वैकुण्ठ में ।।
ऐसा तेज प्रताप कलूका, देव भये अन्तर ध्याने।
गीता भागवत पुराण छोड़के, तज दिये सुरसती अस्थाने ।।
पंचोंकी प्रतीत डूब गयी, पंच न्याव में क्या जाने।
असली तो गमखाके वैठे, नुगुरे भये चातुर ज्ञाने ।।
मुसलमान भये दीन हीन, खोटे कसम खाते खाते।
मतीभ्रष्ठ हो गई दुनियांमे, कलि युगके आते आते ।।१।।
प्रजा में नहीं प्यार रहा, राजा रीत को क्या जाने।
विप्रसें सब लोभी लालची, गौ लगी विष्टा खाने ।।
शील व्रत दिया छोड़ स्त्रीने, वचन पतिका नही माने।
वेटा बापको गाली देता, सुनो कलूके वर्तमाने ।।
भाय्यां में नही भाव रहेगा, भेले नहि वैठे खाने।
जोगी जति सब भोगी भये, अवधूत भये अलमस्ताने ।।
गुरु लोभी अरु चेला लालची, दोनों फिरें रातेमाते।
मतिभ्रष्ट हो गई दुनियां में, कलिजुग के आते आते ।।२।।
नर चले नारी के हुकम में, करी व्याव और सगाई।
मात पिता भाय्यों को छोड़कर, न्यारी रचना रचाई ।।
मात पिता पैसे के लोभ में, वूढे को पुत्री व्याहाई।
देती शाप दिलगीर होयकर, पती योग में पछताई ।।
काफिर खावे माल मशाला, मुसलमान कर उजलाई।
कलि जुग के छाया के अन्दर, डूब गई सब चतुराई ।।
गंगा गुपत हो जाये यारो, पापी दुष्टों के न्हाते न्हाते।
मति भ्रम हो गई दुनिया में, कलि जुग के आते आते ।। ३ ।।

कलकत्ते मुकाम कल्लूका, जमालिया अपना थाना।
वादशाही गई डूब खाली कर, दिया दिल्ली का खजाना ॥
ऐसा तेज प्रताप कल्लूका, भये कंपनी परवाना।
हुकम गिरी महाराज ख्याल के, रसाल गिरी अव रसजाना।
सेवापुरी गुरुदेवपुरी जी, चारों तरफ दुरमत गाना।
गणेश भारती कहे यार तुम, सुनो मेरी प्रेम की वाना ॥
हवा देखकर चलो खुशामद, रखो वहुत सी गम खाते खाते।
मति भ्रष्ट हो गई दुनिया में, कलि जुगी के आते आते ॥४॥

(मांगीनाथ जी धानमण्डी जोधपुर से)

कहे रूपादे सुण गेला माली, सेवरो गूंथिनै हररे लावजो ॥टेक ॥
कौण देव हररे वंगुला वुहारे, कौण देव हररे भर लावै भारी।
पवन देव हररे वंगुला वुहारे, इन्द्र देव हररे भर ल्यावै भारी ॥१॥
कौण देव हररे दालों दलेला, कौण देव हररे रसोड़े तपेला।
माता कुन्ती हररे दाल दलेला, सूरज देव हररे रसोड़े तपेला ॥२॥
कौण देव हररे जानीरा पधारे, कौण देव हररे आगल वाणी।
पांच पाण्डव हररे जानीड़ा पधारे, रिद्ध सिद्ध हररे आगलवाणी ॥३॥
गऊं गेगरा गिणवा विकेला। टांकइये तुलेला जल पाणी।
वोलिया रूपादे उगमनाथरी चेली, रावल सारी राणी ॥ ४ ॥
कहे रूपादे सुण गेला माली, सेवरो गूंथिनै हररे लावजो ॥

(शंकरनाथ मल्लीनाथमठ जोधपुर से)

कहत सूरज राणी सुनो रे कालिंगा।
धणी मोरो दल ले घर आवे लो ॥ टेक ॥
जिस दिन अलख राजा घोड़े जिन धरसे,
हीरा हीरा रतन जडावे लो ॥ १ ॥

जिस दिन धणी राजा घोड़े पगधरशे,
धरती अम्बर दोनौं कम्पे लो ॥ २ ॥
पुड़ियां बांधो पुड़ियां बांधो ध्यान विकावशे ।
काटे तोले जल पानी लो ॥ ३ ॥
सोर घरवा सोर घरवा सूरज तपावशे ।
जीवड़ा जले विनु पानी लो ॥ ४ ॥
सात समुद्रां रो बावो नीर घटावशे ।
नदियां घंटावशे जल पानी लो ॥ ५ ॥
सोनी वरणी रूपे वरणी घड़ियरो घड़ावशे ।
लोहेरीं लाठी घड़ावे लो ॥ ६ ॥
जतियां सतियानुं बावो पाशे वैठा वशे ।
कुड़ियानुं घाण पिसावे लो ॥ ७ ॥
द्विकर जोड लीलाइ वाई बोले,
शव्द चड़्या निरवाणी लो ॥ ८ ॥
कहद सूरज राणी सुनो रे कालिंगा ।
धणी मोरो दल ले घर आवे लो ॥
(लक्ष्मीचन्द्र आहूजा सिंधी से)

भुणेली सूरज राणी धणी मोरो आवशे
कायाम राजा आवेशे । लेखो मागशे .
दानव छेदशे अरिदल मारशे होजी॥ टेक ॥
चीन नगर रा चाढा चढशे,
नर मिड़शे भूना रे कालिंगा ॥ १ ॥
इसा रे मूसा अलील जगावशे ।
गढ़ माथे पहरो जो डींद्रा रे कालिंगा ॥ २ ॥

नर निकलंकी आवशे, पाखर पव धरशे,
धरती अम्बर धुडावशे रे कालिंगा ॥ ३ ॥
द्विकर जोड सुरजा देइ बोले,
चौथा जुग मे होवशे रे कालिंगा ॥ ४ ॥
भुणेली सूरजराणीधणी मोरो आवशे ।
(लोकुमल पोपटमल विलासपुर से)

अपणा गुरूजी अगम भाख्या ॥ टेक ॥
पहिले पवन फरुकसी, खलकेला सायरीयां रो नीर ।
दलने अगम हेलो हांकशी, वंकनाथ बलवीर ॥ १ ॥
पण्डित देवायत धाड़ा दाखवे, सुण पुगलदे जी नार ।
लिख्या भारव्या वेदिन आवसी, झूठी नहीं लगार ॥ २ ॥
काकड़ काकड़ तम्बू ताणसी, सव सव कोश री सीम ।
दल सों दिसे रली आवणो, जामे अर्जुन नाले भीम ॥ ३ ॥
गुरवो वुगुला बैठसी, हंसा करे उनरी सेव ।
न्याति परन्याति वेला जातरा, जागेला निकलंक देव ॥ ४ ॥
लूटी लछमी लोको तणी, खाली नगर वजार ।
थरहर कांपे राणी मेंघणी, ज्यांरी वेहु अनुवार ॥ ५ ॥
कढिया मरदंग वाजसी, नाद वेला वगेला ।
गलियां गलियां मै हेला मारसी, कोइ होवोनि म्हारा चेला ॥ ६ ॥
सोले कलासूं भाण उगसी, काली किरणियांरे माहि ।
जोसिड़ा रो जने उतारसी, आलमरा दल माहि ॥ ७ ॥
ब्रह्मा रा वेद कूड़ा थावसी, कूड़ी काजी री कुराण ।
असल सायजादी चूड़ो पेरसी, ए कलजुगरा ऐलाण ॥ ८ ॥
पोरो आयो सन्तो पापरो, धरती मागेला भोग ।
कितियां कूं खडग उठावसी, कितियां ने उठसी रोग ॥ ९ ॥

सूरा सती छिपो मति अब मचेला संग्राम।
साहेबो कालिंगा ने मारसी, निकलंक धरसी नाम ॥१०॥
नागर वेलरे फल लागसी, पीपल फूलेनि समाय।
चित्तोड चवरी रांचसी, परणेला आलम राय ॥११॥
पच्छिम सूं धणी आवशी, जगत जीवरो वीर।
कलजुग उठाय सत जुग थापसी, बोलिया देवायतपीर ॥१२॥
अपणा गुरूजी अगम भाख्या ॥
(घिसूनाथजी सोजतसे)

पूरण आख्या धरम सब नष्ट होसी,
कलजुग आपना आप दखावनाई।
हड़े समेनूं रहे उडीक लूना,
उह भी समा जहानते आवनाई॥
वारां वरसदी उमर दे विच,
लड़का पिया गोद खडाउनाईं।
वीस वरसदी पोत्रा वेख लेसी,
दादी ओसने नाम धराउनाईं॥
तीस वरसदी नूं पुग मियाद जासी,
ऐसी आयुरषा घट हो जावनाईं।
कनी किसे दी नहीं नयांओं पैसी,
लोकां भूठियां सवानू चावनाईं॥
जती संती धर्मात्मा पुरुप जेहड़े,
उडां आपणा आप छपावनाईं।
चोर चत्रनूं पूछ प्रतीत होसी,
साधां अपना आप लुकावनाईं॥

जदों आन के होसी घोर कलजुग,
निष्कलंकने रूप प्रगटावनाई
काली दास तूं वैठ के आराम करके,
कीते आपनेनूं किसे पावनाई ॥
भगवां पैहिर के साध ग्रहस्त करसन्,
चस्के पैनूगे दूध मलाइयांदे ।
केई खानूगे मास सराव ताईं,
ब्राह्मण धरनूगे रूप कसाइयां दे ॥
जती सती न वैद हकीम रहसन,
उड़ जानूगे असर दवाइयां दे ।
सच भूठे दा नहीं नयायों होसी,
पैसन् फैसले नाल गवाहीयां दे ॥
वोल तोल थीं रहित वैश जासन्,
रखसन् पास कूनाल सर साहींयां दे ।
वेच खाणूगे आपनी कन्यानूं,
केई खाणूगे माल जुआईयाँ दे ॥
सेवक सती नाही पूजनीक रहिसन्,
जतिधरम न गुरु गोसाईंयां दे ।
दोहां सिरांदे जुड़दियां भङ्ग पासन्,
लत्त मारसन् विच कुड़माइयां दे ॥
घर जिन्हादे पद्मणी नार होसी,
भोग करणूगे नाल पराइयां दे ।
काग वाग वहिशत दे शैर करसन्,
हंस विच आजाणगे फाइयां दे ॥

बुरे करणगे जगत ते ऐस इशरत,
भले फिरणगे हाल सुदाइयां दे।
लखां त्याग वराग थीं रहित होसन्,
साधु फिरसन् रूप बनाइयां दे॥
प्रजा दुखी न राज दा दण्ड होसी,
चोर कपडे लाहणगे राहीयां दे।
पुत्र पिता दा न कोई साक रहसी,
वैर पैणगे सकियां भाइयां दे॥
चौके विच बहाणगे कुतियांनूं,
सेवादार न रहणगे गाइयां दे॥
नूहां सौहरियां विच न धरम रहसी,
दिउर जेठ दा नाल भरजाइयां दे॥
माता तुल जोगिनी है शास्त्रने,
वल तकसन चाचियां ताइयां दे।
सत्ता नष्ट अर प्राक्रम दूर होसी,
बल छीण हो जाणगे वाहियांदे॥
कालीदास नारायण अवतार लेसी,
वेले आवसन् फेर भलइयां दे॥
(पूरनमल से)

भक्तों की भविष्यवाणी—

रे पाण्डवाँ ऐसा ऐसा कलजुग आवेला।
रे राघो ऐसा ऐसा नर होवेला ॥टेक॥
ब्रह्मा विष्णु आद महेशा, इन्दर पाट ले थपेला।
सुर तेतीसाँरो मेलो मंडेला, उठे हरने तिलक चढावेला ॥ १ ॥

वढ पीपल दोय वडा विरछला, वाने खोद कढावेला ॥ २ ॥
इण्डिया दोली वाड़ करेला, ऊपर दूध सिंचावेला।
खीर खाण्डरा मेला मण्डिजे, उठे सगाइयाँ सौंपेला।
वेटी साटे वाप परणीजे ऊपर दमडा माँगेला ॥ ३ ॥
साला देख कँवल ज्यूँ फूले, भाइड़ाँ वैर वसावेला।
भेण भाणिजी रो न्यौतो फिरेला, सालियाँ नैं न्यौता जीमावेला ॥ ४ ॥
मात पिता रलि आवणा होवेला, पुतर परणीजे नै घर आवेला
परण्यो पाछे छठे महीने, हुकुम बहूरा हालेला ॥ ५ ॥
वेश्या रे धर लाज होवेला, कुलवन्ती कुल छोडेला।
घररो पुरुप हिरण ज्यूँ राखे, पुरुष पराये रंग राचेला ॥ ६ ॥
छोरा जाय हथय्याँ साजे, हल डोकरियाँ हाँकेला।
बेल वेच मडयामे देला, ऊपर कर्जा राखेला ॥ ७ ॥
ब्राह्मण के घर अज्या होवेला, धोबीरे घर होवेला गाय।
ऊच नीच घर तुलसी होवेला, अब कछू कह्यो नहीं जाय ॥८॥
काग हथेला ने हंस ऊड़ेला, गुरडा पुस्तक वाँचेला।
कहें शुकदेव सुणो पाण्डवाँ, जुग चौथा में वर्त्तेला ॥ ९ ॥
रे पाण्डवाँ ऐसा ऐसा कलजुग आवेला।
रे राघो ऐसा ऐसा नर होवेला ॥

(मगनीराम घाँची जोधपुर से)

हाँ रे राजा ऐसा कलिजुग आवेला।
कोई किसी का कहा न माने।
मन मुख पंथ चलावेला।
हाँरे राजा ऐसा कलिजुग आवेला ॥टेक॥

कलिजुग में इक शहर वसेला, राजा राज करेला।
विना खून दुनियां नै लूटै, किण आगे जाय पुकारेला ॥ १ ॥
ब्रह्मापणो ब्रह्मा घर नाहीं, भेख भिटल होजावेला।
रजमों पणों क्षत्रीघर नाहीं, शूद्र धर्म चलावेला ॥ २ ॥
वेटी साटे वाप परणीजे, ऊपरदमडा लावेला।
भैण साटे भाई परणीजे, अटासटा सब हो जावेला ॥ ३ ॥
मातपितारो कहणो न माने, नारी सें नेह लगावेला।
नारी अपणे खाँविंद कूँ छोडे, और पुरुष संग जावेला ॥ ४ ॥
क्या कहूँ कछू कह्यो नहि जाई, धर्म कर्म सब जावेला।
कहे शुकदेव सुणो गुण ज्ञानी, जात पाँत भ्रम भागेला ॥ ५ ॥
रे राजा ऐसा कलिजुग आवेला।
कोई किसी का कहना न माने।
मन मत पंथ चलावेला ॥

जोय नै विचारो हक हालणू आयो कलिजुग वारो।
निकलंक नर प्रकट होसी, होसी साँझ सवारो ॥
जीवाँ रो धणी प्रगट होयला ॥टेक॥
मेंहरा ममोलिया मूडे वोलसी, वोले अमृत वाणी।
कीडी कांकण पहरसी, कौआ पढसी कुराणी ॥ १ ॥
आकांरे अम्वा लागसी, नीम्वां मोरी दाख।
मेले मिलिजो मुनवरा, सामिह आइ है साख ॥ २ ॥
हाथणीयारा दूध विलोवसी, सोना सोलम थाय।
नागर वेल फल लागसी, कै इक हरिजन खाय ॥ ३ ॥
घर घर घोड़ा घूमसी, घर घर राग छतीस।

वड़री वागली वेद वाँचसी, सुनसी क्रोड़ तेतीस ॥ ४ ॥
पटण पचासाँ जोजनाँ, सौ जोजन तक सीम ।
इतरी धरवे आखणा, बोले पाण्डू भीम ॥ ५ ॥
जोयने विचारो हक हालणू, आयो कलजुग वारो ।
निकलंक नर प्रकट होसी, होसी सांझ सवारो ॥
जीवारोधणी प्रकट होयला ॥

पाण्डवो कलिजुग आवेला भारी, कह गया किशन मुरारी ॥ टेर ॥
काना न सुनिया आखां न देखियां, पाण्डवो भली विचारी ।
पाचों वीर द्रोपदा नारी, देह हिमालये गारी ॥ १ ॥
कलजुग कूड़ पापरो पौरो, नियम छडेला नारी ।
वर्णसंकर जानै पुत्र होवेला, वंश राखोगारी ॥ २ ॥
वाह्योरो वाँरो अन्न नहीं निपजे, पैदा हुआ वन्नूचारी ।
बुद्धियरा हीणा पशुआँ रा मारग, किन्या गिणेन कारी ॥ ३ ॥
देह वांरी छोटी उमर वाँरी ओछी, चारौं वर्ण मासाहारी ।
घोरान घोर जब कलयुग आसी, होसी एकोंकारी ॥ ४ ॥
खटदर्शन तो खेती करसी, भूप होसी भिखियारी ।
जतीसती कोई विरलो रैसी, सब होसी घरबारी ॥ ५ ॥
वेद का तेव कुलुप होजासी, नीच वरण आचारी ।
गंगा जाय मुकुट मे रैसी, यूं सहदेव कहे पुकारी ॥ ६ ॥
पाण्डवो कलिजुग आवेला भारी, कह गया किशन मुरारी ॥टेक॥
(आयस मेघनाथ जी जोधपुर से ३)

वालमीकि तुलसी कह गये, ऐसा कलियुग आवेगा ।
ब्राह्मण होकर वेद न जाने, वृथा जनम गवांवेगा ॥टेक॥
बेटा मात पिता नहि चीन्हें, तृयासे नेह लगावेगा ।
तृया खांविद को नहीं जाने, आन पुरुष मन भावेगा ॥१॥

विना खड् छेत्री हो जावे, शूद्र राज चलावेगा।
जती सती कोई विरला होवे, सब दुखिया हो जावेगा ॥२॥
धन दौलत ले माल खजाना, वेश्या नाच नचावेगा।
मुट्ठी अन्न सन्त कोई मागे, नाज नहीं घर भाखेगा ॥३॥
प्रभु चरणमें नेह न लावे, कैसे भवतर जावेगा।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, फिर पाछे पछतावेगा ॥४॥

ध्यान धरो धणी म्हारा आवेगा, शंकर आन मिलैगा ॥टेक॥
ऐसा तो वाईड़ा वाजैगा, टांका जल तुलेगा।
ऐसा तो वाईड़ा वाजैगा, गिणवा धान विकैगा ॥१॥
ऐसा तो वाईड़ा वाजैगा, पवन से परवत उड़ैगा।
ऐसा तो वाईड़ा वाजैगा, धू लगं जल दढ़ैगा ॥२॥
दमड़ी की दो नारी मिलैगी, टके मरद विकैगा।
कहत कबीर सुनो गरु सन्तो, जुग चौथे मैं वरतैगा ॥३॥
(वलीनाथ दोधार हि० प्र० से)

ऐसे पापी पैदा होंगे कलियुग में ॥टेक॥
पगडी वांधे पेचसवारे ठुमक चाल पग देंगे।
अली गली में फिरते वावरे, नार पराई पापी तकत फिरेंगे ॥१॥
भूखे प्यासे साधु आवै, चिमटी चून न देंगे।
जब राजा का दण्ड पड़ेगा, रोक रुपैया पापी गिण गिण देंगे ॥ २ ॥
वैण भाणिजी कछू न समझे, मन में पाप धरेंगे।
साला ससुरा न्योत जिमावै, भाई वन्धु से पापी रोज लड़ेंगे ॥ ३ ॥
लालच के धोखेसे आकर, झूठी साख भरेंगे।
गंगा जल हाथों में लेकर, जात कचेरी पापी कछू न डरेंगे ॥ ४ ॥
कथा कीरतन हरिगुण गावे, जहाँ पाँव नहीं देंगे।
खेल तमाशे झगड़े माँही, हरख २ पापी अधिक सुनेंगे ॥ ५ ॥

परमारथ की बाट पुरानी, ता को वन्ध करेंगे।
सरकस नाच नोटंकी खातिर, करजा काढ के दूना दाम भरेंगे ॥ ६ ॥
बेटी बेच नाते दीनी, तोहि न पेट भरेंगे।
चोरी करके पड़े कैदमें, छूट जानेसे पापी वोही काम करेंगे ॥ ७ ॥
लाल थंभ लोहे के होंगे, उसके साथ वन्धेंगे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, पाप पुण्य दोनों साथ चलेंगे ॥ ८ ॥
(हरियश मञ्जूपा से)

मना तूं धीरज क्यों न धरे।
चरण शरण राम को रही, ताकी नही विगड़े ॥ टेक ॥
दिल्ली राज चवांण रे रैगो, असुर राज करे।
पलट पठाण दिल्ली तां पीछे, धरापति मुगल धरे ॥ १ ॥
हिन्दूस्तान लाय सब लागे, एक चितोड़ टरे।
ले अवतार वंश गुरु, भरम गढ अम्बेर धरे ॥ २ ॥
जै सिंह नाम तेज अति तांको, तासूं असुर झड़े।
तेज तुरक को ऐसे भागे लोहा कांट जरे ॥ ३ ॥
दिक्षण फौज भरीकर आसी, चारों जुग राज करे।
एक हजार नौ सौ के ऊपर, ऐसो जोग परे ॥ ४ ॥
गैवी खान नाम का गोरा, तांकी फौज फिरे।
दिषण सेना गोरां को आसी, दोई झगड़ मरे ॥ ५ ॥
दोये रहे नहीं दोहु में वींधे, लोहा जार पड़े।
साठ वरस परजा दुख पावे, अंन तृण तेज करे ॥ ६ ॥
मेघनाथ रावण को वेटो, पूरव जनम धरे।
हरवल पवारण के धरे, महीपति नाम धरे ॥ ७ ॥
नन्दन नाम समंधन को होसी, सतगुरु छतर फिरे।
हिन्दु वो तेज़ अप्रवल, गोराही गरभ गले ॥ ८ ॥

पूरब पिच्छिम उत्तर दषिन, एक ही राज करे।
असी वरस लौं सति जुग वरते, धरम की वेल फले ॥ ६ ॥
अण भै वचन अगम से लाया, सतगुरु सुरति सिरे।
तुलसीदास राम रजधानी, टाली नहीं टले ॥ १० ॥
मना तूं धीरज क्यों न धरे, चरण शरण राम की रहो।
ता की नहीं विगड़े, मना तूं धीरज क्यों न धरे ॥
(गोपीलाल खण्डाकलसा जोधपुर से)

अरे मन धीरज क्यों न धरे, काहेको शोच करे।
अरे मन धीरज क्यों न धरे ॥ टेक ॥
मेघनाथ, रावण का वेटा, सो पुनि जनम धरे।
पूरव पच्छिम उत्तर दखिन, चहुँदिश काल परे ॥ १॥
एक सहेंसर नौ सौ के ऊपर, ऐसो जोग परे।
दुष्ट दुष्ट को ऐसे काटे, जैसे कीट जरे ॥ २ ॥
अकाल मृत्यु जग में दर्शै, परजा वहुत मरे।
सहेंसर वरस तक सतजुग वरतें, धरनी की न्यावतरे ॥ ३ ॥
सुवरण फूल फूले पृथिवी पर, पुनि जग दशा फिरे।
सूरदास. कहे हरि की लीला, टारी नहीं टरे ॥ ४ ॥
अरे मन धीरज क्यों धरे, काहेको सोच करे।
अरे मन धीरज क्यों न धरे ॥
(भपूराम हरिजन जोधपुर से)

भूत भविष्यत वर्त्तमान।
रे मन धीरज क्यों न धरे ॥टेक॥
एक सहस्र नौ सौ के ऊपर ऐसो योग परे।
मेघनाथ रावण का बेटा, पूरब जन्म धरे ॥१॥
चौद वरस गदड के लागे, चहुँ दिश काल परै।
चार धाम आन निज फेरे बहु विधि राज करे ॥२॥

हिन्दू तुरक तेज को नाशे जैसे कीट जरे।
भूप उपाय करे सब मिल के, हारे तऊ न टरे ॥३॥
बीस रुद्र होवे गत सगरी, जब ब्रह्म परकाश करे।
शुक्ल नाम सम्वत सर होवै, छठ सोमवार परे ॥४॥
फूटे फौज म्लेच्छ की, द्वन्द फसाद करे।
राजा प्रजा नाश सबही को, देश म्लेच्छ मरे ॥५॥
दक्षिण दिशा से फौजि खिसआवे, कुछ दिन राज करे।
कुछ दिन में ऐसो फिर होवै, आप ही आप मरे ॥६॥
हलधर सुत पवार घर उपजे, दिल्ली छतर धरे।
असी बरस लौ सत जुग वरते, धर्म दी वेल फरे ॥७॥
सूरदास होनी सो होये क्यों कर सोच मरे।
अरे मन धीरज क्यों धरे ॥

(हकीम अमीचन्द नवांशर द्वावा से)

प्रचलित भविष्यवाणी

जयपुर से ६ मील दूर आमेर महल में सालिग्राम तेल में पधराये हुए हैं इस विपय में यह कहावत प्रचलित है—

जब तक सालिग्राम तिल्ली मे, तब तक गादी दिल्ली में।

(रघुनाथ योगी से)

माझा मालवा मैदा, द्वावे का आँटा।
दूरूणी का दलिया, फहाड़ की ढुफाड़ ॥
सात बादशाही माझा, मालवा मध्ये युद्ध मचा ॥
टीडी दल मुसलमानां का, दिल्ली पहुँचेगा हाँका ॥
वम्वानाल धरणी, फूकी जावणी ॥
बारह कोश पर दीया, हिन्दुआँ दा जगिया ॥
आवे बीसा नरहे इसा नरहे मूसा ॥

(बाबा बलीनाथ दोधार (हि० प्र०) से)

उदेसिंह तिन गुरु हित जगे दीप सम दीप।
ईस मूस हिन्दु सकल, पीस दिखावे दीप॥
माभा मलिया द्वावा दलिया विकानेर का दाना।
दिल्ली ढेवे सत्तवी वारी तव सत जुग का आना॥
(दुर्गादास तर्खान नवां शहर द्वावा से)

सत्तानव सत छोडसे, अठानव हट तार।
नवानव नर जाग खे पूरेसी जैकार॥
जब वर्ताजे सम्वत वीसा, तब न रहे मूसा न ईसा॥
बारह कोश पर दीया, एक पुरुष चौदह स्त्रियां॥
(फगुण मल वकाली सिन्धी से)

सब वरणां का एक विवेक, जोगी जंगम रहे न एक।
माटी का जोगी कर पूजेंगे। रांड की माया मरद लुलेंगे॥
(पेशोरनाथ कटनी कैम्प से)

जोगी जन रोगी भये, भोगीं भए सब जोगी।
पंख लगे जन जात को, उड़ने वाली होगी॥
मानो या न मानो मेरी यह बात सच्चा होगी।
मृत्यु को भी जीतने की कोई एक शक्ति होगी॥
(सञ्चेता की स्मृति से)

(जुमलेश्वर, गोरखेश्वर संवाद)

जुमला का श्रीमहाराजा पनि आपना पुत्र समेत श्रीदेवी जगन्नाथ को दर्शन गर्न जाना लाई पाल्नु भयछ र गोर्षा मा आई पुगनु हुदा जुमलेश्वर महाराज का शरीर मा गोर्षा को हावा लाग्दा केहि स्वभाव फिन्यो र व्हाहां ता अलिवेर वसन्या हो भनि वंसनु भयो, जलको प्यास लाग्यो, जल मगाइ जल पान गर्नु हुदा मनमा ढेरै हिकमत बढन गयो र. वहां का मनमा विचार पन्यो. एक क्षण

हावा लाग्दा र एक पटक जलपान गर्दाता मलाइ यस्तो हिकमत वढ्यो, अव दर्वार मा पनि जान्या हो भनि दर्वार मा पुकि श्रीगुरु गोरक्षनाथ को दर्शन गर्नु भयो र, तस वषत मा इनै का प्रभाव ले व्याहा जन्म्या का मानिसको ता झन ठुलो हिकमत होला भन्या ठहराइ उहि घडिमा आफना पुत्र लाई तुषत खालि गर्नु छैन भनि जुमला पठाउनु भयो र, आफु श्री५महाराज नरभूपालसाह सित भेट गर्न पाउ लाग्नु भयो, श्री५नरभूपालसाह महाराज को र श्रीजुमली महाराज को भेट भै क्षेम कुशल वार्ता भै सक्या पछि श्रीजुमली महाराज श्री५महाराजा नरभूपाल साह सित केहि विस्तार गर्न लाग्नु भयो. व्याहा तपाञिका ढुङ्गलाइ श्रीगुरु गोरषनाथ कालिका को वडो मेहेर रहे छ. भन्या जस्तो लाग्यो. तसर्थ जाहां सम्म श्रीगुरु गोरषनाथ श्रीकालिका लाई वडो श्रद्धापूर्वक ले गरि मान्नु होला. व्याहा गोर्षा को अन्न जल षाइ रह्याका सेवक प्रजालाइ श्री५महाराज रामसाह ले वांधिया को नीति पूर्वक ले गरि जाहां सम्म राज काज गर्नु होला. ताहा सम्मत पाञिहेरु को दिनदिन प्रताप वढदै जाला भन्या जस्तो लाग्यो. जव श्रीगुरु गोरषनाथ श्रीकालि को अनादर हुन जाला. तस वषत मा आपना भाइ भैवात अधि देषिन् का गुरु पुरोहित वुन्याद भर भारा दार सव पांच पुरानिञा सित पनि श्री ५ महाराज रामसाह वाट भया को निति थिति चलन जावैन. तस्तै वषत मा तपाञि हेरु को प्रताप पनि घटन जाला वैरी को पति भित्रि हुन जाला भन्या जस्तो लाग्यो भनि विस्तार गरि श्रीजुमलि महाराजा श्री जगन्नाथजि को दर्शन गर्न लाइ जानु हुदो भयो. वाहां देषिन् श्री ५ महाराज नरभूपालेसाह का मन मा यस्तो पऱ्यो. एक दिन आया का जुमलि राजा लाइ ता यस्तो हिकमत वढ्यो हामि त श्री गुरुगोरक्षनाथ श्रीकालिका का शरण मा जन्म्यूं व्याहां को अन्न जल खाइ यो उमेर भयो. हामिले मनसुवा गर्न छोडन्या होइन. तसर्थ पूर्व तर्फ को मनसुवा इत्यादि ॥

सारांश यह कि श्रीगुरु गोरक्षनाथ और भगवती कालिका का समादर होता रहेगा तो नैपाल (गोरखा) राज्य में विदेशी दुशमन का प्रवेश नहीं होने पायगा और देशवासी भी अनुकूल रहेंगे।

(गोरखा वंशावली पृ० १२४ से)

—:०:—

नेपाल में श्री गुरु गोरक्षनाथ, पशुपतिनाथ, भवानी के नामांकित सिक्कों का प्रचलन रहेगा तब तक गोरखा में किसी विदेशी शत्रुका प्रवेश नहीं हो सकेगा ॥

श्रीगुरु गोरक्षनाथजी के निमित्त सवा सवा तोले के सवा लाख रोट चढ़ाकर गोरक्षधूनि या गोरक्षचरण पादुका की पूजा करके समर में उतरने वाला गोरखाली वीर कभी भी हार नहीं खायेगा ॥ यह गोरखा की जन श्रुति है।

(गोरख काली के पुजारी गोरखा से)

ललितपुर (नेपाल) कृष्ण मन्दिर के ऊपर का चक्र गिरने तक मैं (राजा सिद्धि नृसिंह मल्ल) जीवित रहूँगा। इसका लेख भी है—

यावन्न पतते चक्रं श्रीकृष्णस्य च मन्दिरात्।
तावत्सर्वे विजानीयु जीवितोऽहं न संशयः ॥

(देवीनाथ नेपाल मृगस्थलो से)

—:०:—

इसी नगर के राजा योगनरेन्द्र मल्ल का स्वसम्बन्धी भविष्यवाणी है कि मेरे नगर (ललितपुर) में मोती की वर्षा होगी। मेरे दरवार के दायाँ वायाँ स्थित पत्थर के हाथी सुन-(सुवर्ण) धारा में पानी पीने जायेंगे। दरवार के सामने कृष्ण मन्दिर का गरुड़ कुकुटाण्डवत् दो मोती विट् करेगा। दरवार के पूर्वस्थ पाषाण की बन्दूक से बन्दूक जैसा शब्द होगा। वहीं पर पत्थर का कुत्ता है

वह भूसेगा। दरबार के निकटवर्ती सुवर्ण धारा से दूध बहेगा। गादी के पास दवली में लाख्या नाचेगा। अपनी (राजा योगनरेन्द्रमल्ल की) सुवर्ण मूर्ति के सिर पर नाग है नाग के सिर पर चिड़िया है वह चिड़िया उड़ कर स्वर्ग जायेगी। मैं (योगनरेन्द्र मल्ल) भी उसके पीछे स्वर्ग जाऊँगा। इतनी घटना होने तक मैं जीवित रहूँगा॥ इन घटनाओं में मोतियों की वर्षा वि० १९७० के लगभग हो चुकी है। किसी २ मोती की कीमत ५००) तक आंकी गई थी। अन्य घटनायें भी सच होने की संभावना है। नेपाल सरकार सतर्क है॥ (नेपाल ऐतिहासिक कहानी संग्रह, संग्रह कर्त्ता ललितजंग सीजापति से)

उदयपुर के राज्याभिषिक्त राजागण अपनी प्रतिज्ञा और श्रीगुरु गोरक्षनाथजी द्वारा दिये गये खड्ग और खप्पर की यथा पूर्व पूजन पद्धति न तोड़ेंगे तब तक राज्यश्री गौरवान्वित रहेगी।

जोधपुर दुर्ग में श्रीनाथजी की गुफा, धूनि, झरना और चिल्ला-देवी का मन्दिर हैं। इस विषय में सिद्धयोगी चिड़िया नाथजी की उक्तियाँ प्रसिद्ध हैं—

जबतक धूनी, तबतक राजधानी, जबतक रोट, तबतक कोट॥
जबतक झरणा, तबतक प्रगणा, जबतक चिल्ला तबतक किल्ला॥

जयपुर के लिये भी कहा है कि—

कींगणी में कोस थींदो बहत्तर मोमन मरँदा
तहिं खूँ पोय तिजलो थींदो ताजाणिन् जो

इस पर लेखयिता ने नोट कराया है कि सिन्ध के कींगाणी नाम नगर में कोस होने के पश्चाद् जयपुर के किसी राज वंश में जौहर जागेगा॥

ईंदा मरद इरान खूं, चौतरफों चौधार ।
फौजाँ फिरंगिन् ज्यूँ गरक कन्दा तन गार ॥
चवे चवावे पाणथो, गुम्यो हियु असरार ।
वचँदा उहे जो अलह फकड़ जा यार ॥
वरोच जा वार जेके टके विकामँदा टीह ।
साण्हू इयँ मरँदा जियँ मच्छी मरन् जार में ॥

(डाक्टर कन्हैयालाल इन्दौर से)

लगँदन् काण कछ मभों हरकँहिंजे हथन् में ।
कराचिय में काँण लगँदन् हैदराबाद हथों वेंदन् ॥
ईसर सखर शहर उजड्य्ये, रोहडी रँङ्ग लगँदन् ।
ईंदा मरद इरान खूं सखर वखर रोहडी निहोरे नींदा ।
तहिं खूँ पोय थीं दो पस्ता पठाणन जो ॥
कींगणी में कोश थींदो, वहत्तर मोमन मरँदा ॥
तहिं खूँ पोय तिजलो थींदो ताजाणिन् जो ॥
पोंदा दर दरियाव खे भजँदी वन्ध अलोर ।
कुम्भ मच्छी लोहर कहिं समे इंदा सूखडी ॥

धजा भूल से साधो सिन्ध में, बाजे अनहद तूर ।
विजया पड़ से मैदान में, वचे औराँ को सूर ॥

यह पद विशेष विचारणीय है । लेखयिता ने कश्मीर की ओर ध्यान दिलाया है । विशेष पृष्ठ २५ पर

(हुकुमतमल रामबाग कानपुर से)

सिख साहित्य में भविष्यवाणी

वरतारा वरतै जगत, सुनो सिख हित चित लाइ ।
सत गुरु जैसी भावसी, तैसी चलसी वाइ ॥

भविखत वाक संग्रह से—

संग्रह कर्ता-ते-प्रकाशक-भाः प्रतापसिंघ हजूरिया

(मूल पुस्तक गुरु मुखिमें है)

(१) पेशन-गोई शेख नेमतउला

इसलामी दुनियाँ दे पीर हजरत वली नेमतउला शाह ने इक किताव फारसी विच ६०० वर्हे पहिला लिखी सी, जिस विच उन्होंने आउण वाले समें मुतअल्लक अजीव पेशनगोईआं दरज कीतीआं सन, जिन्हांदा तरजमा थले कीता जाँदा है ॥

दूजी वड्डी जंग ६ वर्हे रहेगी आखर अंगरेज जित जाणगे। इसतों पिछों उह हिन्दुस्ताननूं धोखे फरेबनाल दो हिसिआं विच वंड के हिन्दुस्तान नूं छड देणदा ऐलान करनगे। ते विना ताज वाले हाकम (कांगरेस ते लीग) राज करनगे कई तहां दे अवल्ले फुरमान जारी होणगे। जिन्हा ते आमल करन वलों ढिल (दफतरी) नोकर शाही वलों होवेगी। रिश्वत अन गहिली, (लापरवाही) करके चोरी उचक्के चौधरी होणगे। शरीफ ते विद-वान होणगे। मुसलमान आपणे मज्हबनूं छडणगे। परदा, हज, ज़कात, रोजे तों विना होणगे ते बहुत जुलम करनगे। वेहियाई वे परदगी शुरू होवेगी ते वहुत वधेगी, औरतां अपणे सिरांदे वालकटवाणगीआं। घोड़िआं ते सवार होणगीआं अयासी ते बेहियाई करके भैण भरा पिउ धी मां पुतर आपो विचाले नाजाइज तुअल्लकात विच शरम नहीं समझणगे। उस वकत गाफ नाम अते छे हरफांदा वाणीआं (गांधी) मुसलमानांदी हमैत करेगा पर आपणी कौम दे ही इक आदमी हथों मारिआ जावेगा। इसदे कुछ पिछों रब्ब वलों मुसलमानांते वड़ा कहिर

टुटेगा, मुसलनान कंब उठणगे। मुसलमान मारे जाणगे तबाह ते वरबाद होणगे, घबराहट, विच उन्हां नेजाबन्द हिन्दुआंदे हथीं नसणगे जो हिन्दू कौम विचों इक लंबे वालां वाली कौम होणगे। आसार किआमत विच दरज है कि जदों रब्ब दा कहिर उतरेगा तां इक लंभे वालां वाली कौम दे लोग मुसलमानां नूं कतल करन लई उतर आवणगे। मुसलमानदीआं जानां ते जाइ-दादां दोवें ससतीया होण गीआं। उन्हांदे खून दीयां नदीआं वहण गीआं। अटक दरिआ लहू नांल भरके तीन वारी वगेगा। मुसल-मानां दे शहिरांते हिन्दू कबजा कर लैणगे। इन्हांदे (मुसलमानांदे) शहिर सब तों वडी कतल गाह बणेगी हर घर विच करबला बण जाएगी। ऐसे मुसलमान लीडर मौजूद होणगे जो लुक छिप के हिंदूआंदी मदद करनगे। इह सारा वाकिआ उदों घटेगा जदों दोहां ईदां दे विचकार चंद्रमा अवल मंजल इफतान बुरज दुआजकम विच जावेगा ते पचासवें महूरी कतरतों लंघेगा॥

नोट इह हवाला उरदू पुस्तक त्रिकाल दरशी विचों लिखिआ है॥ (भ० पृ० २४५)

—०—

(२) फुरमान शाह नेमतउला जी

(इन सारी प्रेस सहारनपुर छपी.)

वली अल्ला ने इह पेशीन गोईयां संन ५८० हिजरी विच्च अजतों सत अठ सौ साल पहिलां आपणी रूहानी ताकत अनुसार कहीआं। तैमूर बादशाह अते बाबर बादशाह तों लैके मुग-लीआ सलतनत दे अखीर तक दा सारा हाल दिता। इस तों उपरंत पंजाब विच सिखां दा राज होणा फिर अंग्रेजां दे राज तों सभ

तफसील दसी है । उस तों पिछों जो मुसलमाना नाल वीतणा है इन्हां लफजां विच्च बिआन कीता है—

इस जमाना के वाद जो जमाना आएगा तुम देखोगे कि मुसलमानों का अरूज जाता रहेगा। शहिर और कोह वा वीआ-बान मे निडर होकर शराब पी लेंगे। और बगैर इनकार भंग और चरस पीयेंगे। फासक आदमी कौम पर गलबा पा लेंगे बाइज्जत आदमी जलील हो जायेंगे। बेवकूफ आदमी आपने आपको आलम कहिलायेंगे। दुनियां भरके मुसलमान उलमा जालमों की तर्हा हो जायेंगे, आपणी ना अहिलीअत के बावजूद सिर पर तुरादार पगड़ी ते अमामा रखेंगे। उन्हों की मिसाल शिकारी कुत्ते जैसी होगी। मुफतीअल दीन ऐलानीआज़ाहर हुकमे शर्हा के खिलाफ फतवे देंगे। फिका ते तफसीर से गाफल होंगे, फस के फजूर (बिभचार) हर गली कूचेमें फैल जायेगा। मा आपणी बेटी से बहुत से बहाने करेगी। ताऊन और कहितसाली हर जग्हा एक दम फूट पड़ेगी इस बहाने से हर जग्हा मुसलमान बहुत मरेंगे। मुसलमानों में एक शैतान सीरत डाकू होगा जो झूठी रिवाइत हिन्दुस्तान में शाइआ करेगा और लोगों को बेहद्द गुमराह करेगा। खुदा से गुमराह होकर हिन्दुस्तान में बहुत सी तकलीफें खलकत देखेगी (जो अल्ला ताला को आपणे अंदर से ना भूलेंगे उहलोग खुदा वंद की मेहर से बचेंगे। हर जग्हा पर उनकी हिफाजत होगी) इसलाम का झंडा इनकी बुरी हरकत की वजा से आहिस्ते २ गिरता जावेगा। इसलाम और अहिल इसलाम का कोई वतन बाकी नहीं रहेगा। ईरान, बलखबुखारा, हिन्द, सिंध, सब जग्हा से मुसलान निकल जायेंगे। अब्दुल हमीद एक बडा इनसाफ वाला होगा। मशरक और मगरब में काफर हाकम होंगे, हिजरी संन १३८० तक इह सब बातें देखने

में आ जायेंगी पर दुनीआ के बंदे वहुत से खतम हो जायेंगे (इति)
(भ० पृ० २५३)

—०—

(३) सरबंग साधू दे अनभवीवाक

पाठक जी ! इह १८६१ विक्रमी शहिर जवलपुर नरवदा नदी किनारे आपने भजन बंदगी तों जो उन्हानूं सोझी होई उस दी उन्हां छंदा बंदी कीती है, जो संमत लिखे हन उह विकरमी संन २००० तों कुझ मेल खांदेहन ।

छंः—वात भविखत की कहूँ, निरख जोग कै नैन ।
पंडत जन निसचे करो, सति पुरुष के वैन ॥
सति पुरख के वैन, खट चकर के मैल ।
जन सरवंग साधू लिखे, विआर सीस चढ सैल ॥
दूजे तीजे सालमैं हल चल होइ लाहौर ।
भजे खलक भैभीत होये, कहूँ न सुख की ठौर ॥
कहूँ न सुख की ठौर, वात अव कहूँ अगेरी ।
छेवें सतवें साल जगत मैं मौत घनेरी ।
कहत साध सरवंग अवी ना होवे चैन ॥
जीत आए लाहोर, पूरवी हिंदी सैन ।
करी तिआरी जंग की, मानो वुध उदार ॥
करो समाना चौदामें फौज वहुत हथिआर ।
फौज वहुत हथिआर, तोफ गोला वारूद ॥
चौथे पंदरे साल, करो तुम सगल मौजूद ।
कहै साध सरवंग वात मानै वुध गुनी ॥
होवे जंग अपार, तिआरी चौथे सुनी ।

ऊत पंधरे सालमें, मात न मिलसी पूत ॥
जंग होयेंगे बहु घने, दहि दिस नाचै भूत ।
दहि दिस नाचै भूत सुनो तुम और कहानी ॥
दुरसै मौन गुरंड, लड़ेगी सभ राजधानी ।

कहत साध सरवंग, बात साची अवधूत ॥
मात न मिलसी पूत, पंदरवां ऐसा ऊत ।
रौला सोल्हे साल में, घणा पड़ेगा आये ।
फौज लुटेरो फिरेगी, हिन्दुस्तान में धाये ॥
हिन्दुस्तान में धाये, मीह वरसे कुछ थोड़ा ।
चोर ठग धड़वैल, छतर भूपत सिर त्रोड़ा ॥
कहित साध सरवंग, करन हार सब मौला ।
सभी करो प्रतीत साल सोल्हे मैं रौला ॥
साल सतारां अत कठन, बड़ा पैसी काल ।
सेरीं अन्न विकाइसी, परजा बुरा हवाल ॥
परजा बुरा हवाल, चौतरफों होग लडाई ।
तोप तेग बन्दूक, गणत कुछ कही न जाई ॥
कहत साध सरवंग, उते दर काल होये चाल ।
धरे अन्न तृण संच, सतरां आवे साल ॥
पूरब ते आवसी, चेला मरद का सोई ।
पसचम उत्र दिसाते, पहिले प्रगट होई ॥
पहिले प्रगट होइ, उमर तिस बरस अक्कीसा ।
साल सतरे माहे, धरे तिसबल जगदीसा ॥
कहे साध सरवंग, सीस तीस के है कैसा ।
प्रगटे माहि पंजाब, आवसी पूरब देसा ॥
बरस अठारां साल मैं, घनी पड़ेगी आये ।
घास होवे गोरू जीये, नौमण अन्न बिकाये ॥

नौमण अन्न बिकाये, फौज सिर बांधे काले।
लुदपुर को लूट, वड़े फिर सहिर अम्वाले॥
कहै साध सरवंग, दिनो दिन जग मैं हरख।
फौज लुटेरी फिरे, साल अठारे वरख॥
उनीसे वीसे साल मैं, घने होयेंगे जंग।
कालंदरी के तट विखे, रकत ताजीआतंग॥
रकत ताजीआतंग, वात बूझै कोई सूरा।
नाभी विआर संकोच, दुआर दसमें जो पूरा॥
वात इकीसे की कहौं, भइआ अवर का राज।
दिल्ली मैं और सभा मैं, वजै जोडीआं साज॥
वजे जोडीआं साज, वाहि गुरु नाम जपाई।
आण भूप सभ छपे, जथा सिंघन मिर गाई॥
कहित साध सरवंग, पाप की भागीरात।
सूरज चड़हिआ धरम का, इकीसे साची वात॥
अठारां सौ का हठ है, कथनी कही वनाये।
वैठ नरवदा तट विखे, भावी दई सुनाये॥
नदी नरवदा नीर तट, शहिर जवलपुर नाम।
उसी जिले मैं विचर हों, साध सरवंग है नाम॥

पाठक जी! इह भविखत वाक सरवंग साधू वाले करीवन संन १९२१-२२ विच साडे पास आये होये सन। आपजी ने पड़े हे सन, फेर तवजो करके पड़्हो देखो कैसा करड़ा समां आगे आ रिहा है। २०१५-१६-१७ विच मां पुत नहीं संभालेगी, भाव दुनिआं दे वंदे वहुत गिणती विच खतम हो जाणगें। जो रब्ब तों वेमुख हन उह इथे भी दुखी होके मरनगे, ते अगे भी दुखी ही होणगे। इह महा पुरुष २०१७ विच कलगी अवतार दा प्रगट होणा दसदा है ते फेर इकी, च दिल्ली तखत राज साज होवेगा, वजे जोडीआं, साज, वाहि

गुरू नाम जपाई ।" सभ थां खालसे दा प्रताप होवेगा, इह्दी कथनी इह कुझ दसदी है । अगे वाहि गुरू दी गती वाहि गुरू जाणे । इति (भ० पृ० २२४)

(साखी नं ६१ दशमेश गुरु)

(यह साखी उर्दूमें भी प्रकाशित है)

गंगा जालग धरनं पर, तालग तुरकन वीज ।
इही साल मे मौनन्नृप, भोगे राज रवीज ॥
घर घर उठे उदेग जब, उनी सौके साल ।
मार गुरिंडी करहिगे, तवे खालसा चाल ॥
उदे सिंघ तन गुरु हित, जगे दीप ससदीप ।
ईस मूस हिन्दू खलक, पीस दखावे दीप ॥
सहित अठती कलू गत, हरि कलकी अवतार ।
तांदिन हमभी आवसी, होइ असव असवार ॥
सरना मरना मार मर, गलणा गल गल सीत ।
सिख खालसा तियाग तन, तां लग शहीदन रीत ॥
सेर सेर आंटे के पागे, भागे फिरे तुरकन के आगे ।
टोपी धर म्लेच्छ को, देहउ राज समाज ॥
सो हम पर बल होइके, बहुत वजावै वाज ।
उडगनाथ पितधामते, आवै धर जो टोप ॥
झगर करे जब खालसा, ताहिं वटावें उप ।
खालसा होवै दीन गत, उन्हें बढ़ै हंकार ॥
तव तिन को हन डारहों, अनिक भात दै मार ।
गुर तेग बहादर के बचनते, प्रटग भइउ इह आइ ॥
मही साफ सभी करैंगे, खालसा देख डराइ ।
उनी सात को पेखीयै, वरप सतानवे जाई ॥
दोइ नाग के भीतरें, असरन रहसी काई ।

काल नगर निह कलंक, फिर जावै कर चैन।
या विध बीते खालसा, माइया सुपने सैन॥
यथा—तुसां सुचेत रहिणा, असींभी नाउ उतरेंगे।
राम दास सर संगती, नावैं सभि नित॥
छे जोजन गुर नगर वसै, हम आवहि मित।
बैठ दुलीचे चवर ढले, सिख दरसन चित॥
सिंघ लाख पंज एकठे, गज वाज समेत।
पहिलां आवै उदेसिंघ, फित कारी फेत॥
भाणा मनहुं सीस पर, जीवन होई चेत।

चौपाई

कावल सिख हमारा होसी, विशन सिंघ तह नाम धरेसी।
सभि तुरकनको संग सो लेवै, सिंध विदसता जुध मचैदें॥
जंबू पिसट महां वल सेवै, जा कश्मीर विशन सिंह लेवै।
लवपुर जुध होत वहुभारा, चढ़े खालसा वेसुमारा॥
फिरोजपुर मारेउ शिकारा, सहारनपुर मारिउ जंकारा।

॥ दोहा ॥

चत्र जोजन दिली रहै, राजा तजे परान।
दलीप सिंह तखत पर वहै, सब जग करै सलाम॥
अब तुम मेरे वचन की, नहि मानो परतीत।
तव ही तुमको होइगी अनिक भाँत की रीत॥

(पृ० ३३४ से भी)

—:o:—

शंकर वरन प्रजा सभ होई, येक गियात को रहा न कोई।
अति विभचार फसी वर नारी, धरम रीति की प्रीति विसारी॥४॥
ढूंढत सांच न कतहूँ पाया, झूठ ही संग सभो चित लाया।
भिन्न भिन्न ग्रिह ग्रिह मत होई, सास्त्र सिंमृति छुऐ न कोई॥६॥

हिंदुव कोई न तुरका रहिहै, भिंन भिंन घर घर मत गहिहै।
एक एक के पंथ न चलहैं, धरम करम पर चलै न कुवैहै ॥७॥
हिंद तुरक मति दुहुं प्रहरि करि, चलहै भिंन २ मत घर घर।
एक एक को मंत्र न गहिहै, एक एक को संगि न रहिहै ॥११॥
शुद्र धाम वसिहै व्रहमीणी, वइस नारी हुइ है छत्राणी।
वसै छत्र धाम बैसानी, व्रहमन गृह इसत्री सूद्रानी ॥१५॥

गृहं गृहं नये मतं, भई धरं नई गतं।
अधरम राजत' लई, निकार धरमं देस दई ॥ ४६॥
नये नितं मतं, उठै एक एकं।
करै नित अनरथं, अनेकं अनेकं ॥ ५६॥
नहीं वेद वाक प्रमान हैं। मत भिंन २ वखान हैं ॥६१॥

कहूँ न चरचा कहूँ न वेदं, कहूँ न निमाज न कतहूँ कतेवं।
कहूँ न तसवी कहूँ न माला, कहूँ न होमं कहूँ न ज्वाला ॥१२८॥
अउर ही भांतं अउरही वसत्रं, अउरही वाणी अउर ही असत्रं।
अउरही भांतं अउरही भायं, अउर ही राजा अउर नियायं ॥१३०॥
पाप समूह विनाशन कउ केलकी अवतार कहावहिगे।
तर कच्छि तरंग सपच्छ वडो कर काढि कृपाण कंपावहिगे ॥
निकसे जिम केहर परवतते तस सोभ दिआले पावहिगे।
भल भाग भया, इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहिगे ॥१४१॥
छीन महा दिजे, दीन दसा लख दीन दिआल रिसावहिगे।
खग काढि अभंग निसंग हठी रण रंग तुरंग नचावहिगे ॥
रिप जीत अजीत अभीत वडे अवनी पै सभै जस गावहिगे।
भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहिगे ॥१४४॥

(दसम गुरु ग्रंथ साहिवजीसे)

—:o:—

पुराणों में भविष्यवाणी

महाभारत वन पूर्व

इन्द्र विना काल के वरसा करेगा और सूर्य उदय और अस्त काल में राहु से अन्तर्हित होने लगेगा। ७६। खेतियों में अन्न उत्पन्न नहीं होगा। स्त्रियाँ वड़ी कर्कशा और खोटा वचन बोलने वाली हो जायेंगी उनको रोना वहुत अच्छा लगेगा और पति की आज्ञा नहीं मानेंगी। पुत्र माता और पिता को मारने लगेंगे। ८०।८१। स्त्रियाँ पुत्र का आश्रय लेकर अपने पति को मारेंगी। राहु विना पर्व के सूर्य को ग्रसने लगेगा। ८२।

अग्नि सब ओर वहुत लगा करेगी और राहगीरों को माँगने पर भी कोई भोजन नहीं देगा और न कोई उनको कहीं टिकने देगा। तव वे निकाले हुए राहगीर जहाँ तहाँ मार्गों में ही पड़े रहेंगे और निवार्त शब्द के होने से काग मृग और पक्षी भयानक बोलियाँ वोलेंगे और मनुष्य अपने-अपने मित्र, सम्बन्धी और स्वजन परि-जनों को छोड़-छोड़ कर अनेक देश दिशा पत्तन और नगरों में जावेंगे। इसके उपरान्त जब कलियुग समाप्ति पर आवेगा तब ऐसा दारुण समय होगा कि मनुष्य एक दूसरे को हाय बेटा हाय पिता पुकारने लगेंगे। इस प्रकार से जब युग क्षय हो जायगा तब भगवान फिर कृपा करेंगे और द्विजाति आदि सब वर्ण लोक में बढ़ने लगेंगे और जिस दिन सूर्य चन्द्रमा और बृहस्पति पुष्प नक्षत्र में एक ही समय एक राशी पर आ जायँगे उसी दिन सतयुग लग जायगा।

और संसार के सब उपद्रव शान्त होकर सुकाल होने लगेगा। और मनुष्य आरोग्य होने लगेंगे ॥ ९१-९२ ॥ इत्यादि पृष्ठ ४२७ ॥

अनुवादक श्री पं० कुञ्ज बिहारी लाल जी
प्रकाशक नवलकिशोर प्रेस लखनऊ

श्रीमद्भागवत द्वादश स्कन्ध अ० १

परीक्षत्! इसके पश्चाद अवभृति-नगरी के सात आभीर दश गर्दभी और सोलह कंक पृथ्वी का राज्य करेंगे। ये सब के सब बड़े लोभी होंगे ॥ २९ ॥

इसके बाद आठ यवन चौदह तुर्क राज्य करेंगे। इसके बाद दस गुरुण्ड और ग्यारह मौन नरपता होंगे ॥ ३० ॥

मौनों के अतिरिक्त ये सब एक हजार निन्यानवे वर्ष तक पृथ्वी का उप भोग करेंगे। तथा ग्यारह मौन नरपति तीन सौ वर्ष तक पृथ्वी का शासन करेंगे जब उनका राज्य काल समाप्त हो जायगा तब किलिकिला नाम की नगरी में भूतनन्द नाम का राजा होगा। भूत नन्द का वंगिरि वंगिरि का भाई शिशुनन्दि तथा यशोनन्दि और प्रवीरक ये एक सौ छः वर्ष तक राज्य करेंगे ॥ ३१-३३ ॥

इनके तेरह पुत्र होंगे और वे सब के सब वाह्लिक कहलायेंगे। उनके पश्चात् पुष्पमित्र नामक क्षत्रिय और उसके पुत्र दुर्मित्र का राज्य होगा ॥ ३४ ॥

परीक्षित्! वाह्लिकवंशी नरपती एक साथ ही विभिन्न प्रदेशों में राज्य करेंगें उनमें से सात आन्ध्रदेश के तथा सात ही कोसल देश के अधिपति होंगे कुछ विदुर भूमि के शासक और कुछ निषध देश के स्वामी होंगे ॥ ३५ ॥

इनके बाद मगध देश का राजा होगा विश्व स्फूर्ति यह पूर्वोक्त

पुरंजय के अतिरिक्त द्वितीय पुरञ्जय कहलायेगा। यह ब्राह्मणादि उच्च वर्णों को पुलिन्द, यदु और मदु आदि म्लेच्छ प्राय जातियों के रूप में परिणत कर देगा ॥ ३६ ॥

इसकी बुद्धि इतनी दुष्ट होगी कि यह ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यों का नाश करके शूद्र प्राय जनता की रक्षा करेगा। यह अपने बल वीर्य से क्षत्रियों को उजाड़ देगा और पद्मवती पुरी को राजधानी बना कर हरिद्वार से लेकर प्रयाग पर्यन्त सुरक्षित पृथ्वी का राज्य करेगा ॥ ३७ ॥

परीक्षित ! ज्यों २ घोर कलियुग आता जायगा त्यों २ सौराष्ट्र अवन्ती आभीर शूर अर्बुद और मालव देश के ब्राह्मण गण संस्कार शून्य हो जायेंगे तथा राजा लोग भी शूद्र तुल्य हो जायेंगे ॥ ३८ ॥

सिन्धु तट, चन्द्रभागा का तटवर्त्ती प्रदेश कौन्ती पुरी और काश्मीर मण्डल पर प्राय शूद्रों का संस्कार एवं ब्रह्म तेज से हीन नाम मात्र के द्विजों का और म्लेच्छों का राज्य होगा ॥ ३९ ॥

परीक्षित् ! ये सब के सब राजा आचार विचार में म्लेच्छ प्राय होंगे। ये सब एक ही समय भिन्न भिन्न प्रान्तों में राज्य करेंगे। ये सब के सब परले सिरे के झूठे अधार्मिक और स्वल्प दान करने वाले होंगे। छोटी छोटी बातों को लेकर ही वे क्रोध के मारे आग बबूला हो जाया करेंगे ॥ ४० ॥

ये दुष्ट लोग बच्चों गौओं ब्राह्मणों को मारने में भी नहीं हिचकेंगे। दूसरे की स्त्री और धन हथिया लेने के लिये सर्वदा उत्सुक रहेंगे। न तो इन्हें बढ़ते देर लगेगी और न तो घटते। क्षण में रुष्ट तो क्षण में तुष्ट। इनकी शक्ति और आयु थोडी होंगी ॥४१॥

इनमें परंपरागत संस्कार नहीं होंगे ये अपने कर्तव्य कर्म का पालन नहीं करेंगे रजो गुण और तमो गुण से अन्धे बने रहेंगे। राजा के वेष में वे म्लेच्छ ही होंगे। वे लूट खसोट कर अपनी प्रजा का

खून चूसेंगे ॥ ४२ ॥ जब ऐसे लोगों का शासन होगा तो देश की प्रजा में भी वैसे ही स्वभाव आचार और भाषण की वृद्धि हो जायगी। राजा लोग तो उनका शोषण करेंगे ही वे आपस में भी एक दूसरे को उत्पीड़ित करेंगे और अन्तः सब के सब नष्ट हो जायंगे ॥ ४२ ॥ इत्यादि॰॥ पृ० ९५६ ॥

श्रीभागवत सुधा सागर से प्रकाशक गीताप्रेस

भविष्य पुराण १४१ अध्याय—

……फिर विक्रमादित्य उज्जयिनी में राजा होगा जो करोड़ों म्लेच्छों को मार धर्म स्थापन कर एक सौ पैंतीस वर्ष राज्य करेगा इसके अनन्तर सौ वर्ष पर्यन्त बड़ा प्रतापी शालीवाहन नाम राजा राज्य करेगा। इसके अनन्तर आठ यवन और सोलह तुरुष्क साढ़े तीन सौ वर्ष राज्य करेंगे पीछे गुरण्ड नाम दश राजा एक सौ सोलह वर्ष पर्यन्त राज्य भोग करेंगे पीछे मौन नामक ग्यारह राजा तीन सौ वर्ष भूमि भोगेंगे इनके अनन्तर किलकिला में भूतनन्द आदि राजा १०५ वर्ष राज्य करेंगे इतने तो कलियुग में चक्रवर्ती राजा होंगे। पीछे खण्ड राज हो जायगा अर्थात् एक-एक देश के जुदे-जुदे राजा हो जायेंगे उन भूतनन्द नामक राजाओं के तेरह पुत्र वह्लिक राजा होंगे। सात राजा कोशल देश में होंगे इनके अनन्तर वैदूर पति नैषध राजा होंगे पीछे विश्वस्फुर्जित राजा अति क्रोधी और दुष्ट होगा वह सब वर्णों को म्लेच्छ प्रायः करेगा सिन्धु के तीर में कश्मीर में और कांची आदि देशों में म्लेच्छों का राज हो जायगा ये सब राजा बड़े क्रोधी अल्पायुष और अल्प सत्व होंगे और अपनी प्रजा को भक्षण करेंगे इस भाँति का राज्य चार सौ बारह वर्ष रहेगा। इस प्रकार जब धर्म का नाश होने लगेगा तब पश्चिम देश में बड़ा ब्रह्मज्ञानी एक

राजर्षि उत्पन्न होगा उसकी आज्ञानुसार सब राजा राज्य करेंगे कलियुग में भी धर्म की वृद्धि और म्लेच्छों का नाश वह करेगा। उनके अनन्तर बड़े प्रतापी और प्रजा का रक्षण करनेहारे गौर मुख नाम राजा होंगे जिनके राज्य की बहुत शीघ्र वृद्धि हो जायगी सब राजा उनको कर देंगे। वे एक सौ अस्सी वर्ष नीति शास्त्र के अनुसार राज्य कर पश्चिम देश मनुष्यों के हाथ अभाव को प्राप्त होंगे। जब वेद में और ब्राह्मणों में शुद्धता होगी तब धर्म के विरोधी म्लेच्छों को राजा जीतेंगे और प्रजा के पालन करने हारे हजारों राजा होंगे वे सब साढ़े तीन सौ वर्ष राज्य करेंगे। कुछ काल के अनन्तर उनके वंश में बड़ा धर्मात्मा और प्रतापी विजय नाम राजा होगा जिसके वंश में साढ़े पाँच सौ वर्ष राज्य करेंगे इनके अनन्तर रोहितक नाम नगर में नागार्जुन राजा बड़ा प्रतापी होगा उसके वंश में उत्पन्न राजा एक हजार वर्ष पर्यन्त राज्य करेंगे। फिर राजा बली नामक होगा जिसके घराने में ग्यारह सौ वर्ष राज्य रहेगा इनके अनन्तर शूद्र म्लेच्छादि राजा होंगे सब जगत म्लेच्छ हो जायगा धर्म कहीं नहीं रहेगा तब विष्णु भगवान् का कल्कि नाम अवतार होगा वह अपने अश्व पर चढ़ सब म्लेच्छों का संहार कर धर्म का स्थापन करेगा तब फिर सतयुग की प्रवृति होगी—इत्यादि ॥ पृष्ठ ३०२ ॥

अनुवादक पं० दुर्गा प्रसाद चौरासिया गौड़

प्रकाशक नवलकिशोर प्रेस

समाचार पत्रों में भविष्यवाणी

साबक केसर जर्मनीके ताजा ख्यालात

दश बरस के अन्दर अन्दर दुनियाँ को एक और जंग का सामना करना होगा। दुनियांकी आयन्दा जंग, इस जङ्ग में यूरप की

तमाम सलतनतें सरीक होंगी। कोई भी इससे अलायदा न रहेंगी। यहाँ अपनी जलावतनी की जगह देख रहा हूँ कि मगरब के उफक से एक खोफनाक जङ्ग की घटायें उठ रही हैं। यह ऐसी सख्त जङ्ग होगी जिसके सामने पिछली जङ्ग हेच होंगी। तमाम दुनियां खून से ग़रक हो जायेगी। वहुत से मुल्क वैरान हो जायेंगे, वहुत से सलतनतें नापैज हो जायेंगी। दुनियाँ की तमाम कौमें इस मुसीवत से चीख उठेंगी। ऐसी मुसीवत जिनसे आलम इनसानियत अव तक ना वाकफ है। यह जङ्ग निहायत हैवत नाक होगी क्यों कि इसके जहूर के वक्त दुनियाँ की तमाम कोमें पूरे तौर पर नये इसला से ऐरास्ता होगी। हाँ मैं देख रहा हूँ कि तमाम कोमें जङ्ग की तैयारियाँ कर रही हैं। मजलस अकवाम की कोई परवाह नहीं करता इत्यादि ॥

अकाली "२ जुलाई १६२७, अमृतसर।

नोट—लेख विस्तारपूर्वक था, यहाँ केवल शीर्षक मात्र का „ उद्धरण किया गया है।

अरविन्द घोष

हिन्दुस्तान और पाकस्तान अवश्य एक हो जायेंगे,...... यह मैं साफ साफ देख रहा हूँ......

१८ अगस्त १६५२ हिन्दुस्तान (सिन्धी पत्र)।

विनोवा भावे

वह दिन दूर नहीं जव यह बनावटी वटवारा खतम हो जायगा और दोनों मुल्क हिन्दुस्तान और पाकस्तीन मिलकर एक हो जायेंगे।

हिन्दुवासी (सिन्धीपत्र)
२-७-५२ बुधवार, अजमेर।

शुभाशुभ की विचारवाणी

कहीं जाते समय नीचे लिखे नियमका पालन करने से सुख मिलेगा—

सोम शनिश्चर पूरव न चाल, मंगल बुद्ध उत्तर दिशिकाल।
रवि शुक्र जो पश्चिम दिश जाय, हानि होय पथि सुख नहिं पाय॥
जो विसपत को दखिन दिश जाय, विना गुनाह जूते खाय।
(विफै दखिन करे पयाना, फिर नहीं समझै ताको आना॥)
बुद्ध कहे मैं बड़ा सयाना, मोरे दिन जो करे पयाना।
कौड़ी से नहीं भेट कराऊँ, कल कुशल से घर पहुँचाऊँ॥
रवि ताम्बुल, सोमके दरपन, मंगलवार गुड़ धनियाँ चरवन।
बुद्ध मीठाइ; विसपत राई, शुक्र कहे मोहे दही सुहाई॥
शनि वाय विड़ंग, जो खाये, इन्द्र जीत पुत्र घर आये।
रवि दिन वास चमार घर, शनि दिन नाई गेह।
मंगल कछी राइ का घर, बुद्ध दिन रजक सनेह॥
गुरु दिन ब्राह्मण के वसे, भृगु दिन वैश्य सभार।
शनि दिन वेश्या के वसे, भड्डली कहे विचार॥

लक्षण विचार

निम्न लक्षण दीख पड़ें तो कहीं भी न जाय--

गमन समय जो स्वान। फड़फड़ाय दे कान॥
एक शूद्र दो वैश्य असार। तीन विप्र अस छत्री चार॥
सनमुख आवै जो नौ नार। कहे भड्डली अशुभ विचार॥
स्वान धुने जो अंग, अथवा लोटे भूमि पर।
तो निज कारज भंग, अतिहि कुसुगन जानिये॥
भैंसा पाँच पट स्वान। एक वैल एक वकरा जान॥
तीन धेनु गज सात प्रमान। चलत मिले मत करो पयान॥

छींक विचार

सनमुख छींक लडाई भाखे। पीठ पाछली सुख अभिलाखे ॥
छींक दाहिनी धन को नाशे। वाम छींक सुख सदा प्रकाशे ॥
ऊँची छींक महा शुभ कारी। नीची छींक महा भयकारी ॥
अपनी छींक महा सुख दाई। कह भडली जोसी समुझाई ॥
अपनी छींक राम वन गयेऊ। सीता हरन तुरन्त भयेऊ ॥
पूरब छींक मरण सनेई। अगनि छींक जुर आवे देई ॥
दिखण छींक करे वहारा। नेतर छींक भरे भण्डारा ॥
पिछम छींक करे वोहणा[1]। वायव छींक करे मीलणा ॥
उत्तर छींक महा वलवन्त। ईशान छींक धन मिले तुरन्त ॥
आकाश छींक जो नर जावे। वलतो मिन्दिर धान नहीं खावे ॥
पाताल छींक सुख आवे अति। इसविध बोले गोरख जति ॥
अपनी छींक पाय नहीं धरीजै। घर वैठे अनन्दु कीजै ॥

(औघड़नाथ सोजत से)

गमन समय निम्नं लक्षण दीखें तो मनोरथ सिद्ध होंगे—

लोमा फिर फिर दरश दिखावै। वायें मृग दाहिने आवै ॥
भडली ऋषि यह सगुन वतावै। सगरे कारज सिद्ध होय जावै ॥
नारी सुहागिनी जल घट लावे। दधि मछली जो सनमुख आवै ॥
सनमुख धेनु पियावै वाछा। यही सकुन है सबसे आछा ॥
चलत समय नेवला मिल जाय। वाम भाग चारा चखु[2] खाय ॥
काग दाहिने खेत सुहाय। सफल मनोरथ समझो भाय ॥

---

१ अच्छा। २ नील कण्ठ।

स्वर विचार

शुक्रे सोमे बुध वाम। यहि स्वर जीते लंका राम ॥
जो स्वर चले सोई पग दीजै। काहे पण्डित पत्रा लीजै ॥
शकुन शुभाशुभ निकट हो, अथवा होवे दूर।
दूरी से दूरी निकट, समझो फल भरपूर ॥

प्रसूति विचार

सावण घोड़ी भादवे गाय, माघमास में भैंस व्याय।
कहे डंक यह साँची बात, आप मरे या मालिक खात ॥
(चैत्र में कुत्ति वैसाख में ऊटनी जेठ में बिल्ली गधी घोडि सावन।
भादव गौ अरु कार्तिक मानुषी पौष अजा रु कुरंगी वियावन।
माघ में भैंस किधौं हथिनी घर जाहि के सूवहीं भाग कटा के।
सो घर जान, भयो शुभ हीन मलीन सुदीन सवै दुख ताके ॥)

निम्न विधि का सेवन करने से शारीरिक सुख मिलेगी—

खाय के मूते सूते बाँव, काहे वैद बसावे गाँव।
प्रात काल जो खाट से उठ कर, पीवे तुरत जो पानी ॥
कबहूँ घर में वैद न आवै, बात डंक कर जानी।
खेती तो थोड़ी करे महिनत करे सवाय ॥
राम चाहे उस मनुख को टोटा कबहुन आय।

(श्रीपृथ्वी सिंह जोधपुर से)

भगवान् का अवतरण

मनुष्य, धर्म (जिससे संपूर्ण जीवजाति को सुख शान्ति मिलती है) के सार तत्व को न समझकर केवल स्वार्थ सिद्धि के लोभ से या भेदबुद्धि के कारण एक दूसरे का खण्डन मण्डन और निन्दा स्तुति करने लगता है तब अनेकानेक मतमतान्तर राग द्वेष

वैर विरोध रोग सोक आदि की वृद्धि होती है और पक्षपात के विष से सारा वातारण दूषित हो उठता है। ऐसे दुष्कृत्यों को मिटाने के लिये ही भगवान् का अवतरण होता है।

कलियुगमें कल्कि भगवान् का अवतार होगा, यह पुराणों में गाया गया है किन्तु यहां जनश्रुतिप्रथागत विषय का संग्रह है, अतः उसी को प्रस्तुत करते हैं॥ हिन्दी के पुराने शब्द वाणी गाने वाले भक्तों का कहना है कि युग युग में भगवान् का अवतार क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जाति में होता है। वर्त्तमान कलियुग में किसी शूद्र के घर भगवान् का आविर्भाव होना बताते हैं। जो कुछ भी हो, भगवान् अवतार ग्रहण अवश्य करते हैं, यह सब धर्मावलम्वी अवतारवादी सत्पुरुष मानते हैं॥

भगवान् के पाप पर्याय नाम क्यों हैं! यह वयोवृद्ध ज्ञानी महात्माओं से अवगत करने का विषय है॥ इस का उत्तार इस कथानक से भी मिल सकेगा--

एक वार सिद्ध श्रीपाकलनाथजी समयानुकूलता जानने की इच्छा से किसी नगर में पधारे और चौक चौक पर खड़े होकर कन्याकी भिक्षा माँगी किन्तु इस वात पर सबने हंसी उड़ाई, भीक्षा किसी से भी नहीं मिली, अन्ततोगत्वा तीसरे दिन किसी शूद्र* जाति के भगवद्भक्तने ११ मास की एकलौती कन्या लाकर नाथ जी की झोली में डाल दी, नाथ जी वड़े प्रसन्न हुए किन्तु समय का परिवर्त्तन जानकर विस्मित भी हुए, गम्भीर मुद्रा में कहा भक्तवर! कलिमें तुम्हारा प्रभाव वढ़ेगा सव जाति तुम्हारा अनुकरण करेंगी और तुम्हारे प्रभुत्व के अधीन रहेंगी। तुम्हारी यह कन्या देवी के रूप में आइमाता, व आईनाथ के

---

* यह मेघवार जाति का है इसी कुल में मेघ्रिणी नाम की कन्या होगी, जनश्रुति है कि यह निष्कलंक भगवान् को अपना पती वरेगी।

नाम से पूजी जायगी और वाञ्छित फल देनेवाली होगी। इसके बड़े २ मन्दिर बनेंगे (हिवलो वरे आई मातारे देवले, विरला छांग करेला) युवावस्था में लोक हिताय जहां तहां भ्रमण करेगी। कुतर्की लोग व्यभिचारिणी समझ कर कलंकित करेंगे, कन्या की याचना करने से मेरे ऊपर भी लोगोंने दुर्भावना करके कलंक लगाया है। कलि में मनुष्यों की बुद्धि बदल जायगी, पापाचार को भी सदाचार समझने लगेंगे। सच्चे को झूठा झूठे को सच्चा बतायेंगे। जब सारा संसार पाप से कंपाय मान होने लगेगा तब मैं एक अलौकिक अश्वपर चढ़के पृथ्वी की परिक्रमा करूंगा (सुफेद घोड़ा सुफेद पलाण। जापर बैठे अलख पुरुष श्रीनाथ निर्वाण) उस समय घोड़े के खुराघात से तमाम पर्वत नगर धसक जायेंगे नदी नालों का रुख बदल जायगा, नासोच्छ्वास से नाना प्रकार के रोग पैदा होंगे। मेरी दृष्टि जिधर दौड़ेगी अग्नि की वर्षा होने लगेगी इस प्रकार सम्पूर्ण पापाचारी दुष्ट दम्भी लोग जलभून कर खाक हो जायेंगे। वही बचेंगे जो सदाचारी दृढप्रतिज्ञ और समस्त जीव जाति को सुख शान्ति मिलने का उपाय करने वाले होंगे।

इस प्रकार पृथ्वी की परिक्रमा करके यहां आऊंगा उस समय तुम्हारी इस कन्या का जन्म यहां हुआ होगा। तब यह कन्या मुझे रोकेगी उस समय अश्वावतार भगवान् गुप्त हो जायंगे मेरा सिर कट जायगा। यह कन्या मुझे वरेगी किन्तु निष्प्राण शरीर पाकर सती हो जायगी तब से हम अश्वरूप समेत निष्कलंक कहलायेंगे तभी से सत्य युग का आरम्भ होगा धर्म की स्थापना होगी। इत्यादि उपदेश देकर श्रीफकलनाथ जी अर्न्तध्यान हो गये भक्त अपनी पुत्री समेत घर आया और भगवान् के भजन पूजन में तत्पर रहने लगा। आई माता या आईनाथजी की पूजा प्रतिष्ठा अद्यावधि हो रही है और पूजकों को वाञ्छित फल भी मिलता रहता है॥

उक्त घटना कब और कहाँ होगी इस विषय को जानने के लिए साधकों की अनेकानेक वाणियाँ प्रचलित हैं २-४ यहां भी संगृहीत हैं—

आँका रे आंबा नीपजे नीमारे निपजे दाखां पृ० ४७ पर ॥ नागर वेलरे फललागसी पीपल फूलेन समाय ॥ साहेबो कालिंगाने मारसी निकलंक धरसी भाम ॥ चित्तोड़ चौरी रांचसी परनेला आलम राय ॥ पृ० ५४ पर ॥ थरहर कंपे मेरी मेघली भोम सहे नहीं भार । तुरी नरवो पधार से घोड़ले, चढ़ सोई कलतार ॥ पृ० २६ पर ॥ हरिया तोरण तारा मण्डल चौरी रतन जड़ावसी मेघणीपर दया करसी सही आलम आवसी ॥ पृ० २८ पर ॥ सावनैसिणगारलो चढ़ै आलमरी जान। मोर बाँध परणीजे मेघणी जुग चौथौ परियाण ! साधाने अमरा पुरी ले चढ़ै बावो सो निरवाण ॥ पृ० ४७ ॥ इत्यादि और भी

———

गोरक्ष डिब्बी

गोरक्ष डिब्बी की कथा का मूल कारण उमा महेश का मायारहितत्व और मायासहितत्व का परिचायक चरित्र है "वह दो प्रकार से है" एक तो यह है कि देवी के मन में अहंभाव पैदा हुआ कि मेरी माया से कोई भी मुक्त नहीं हो सकता यानी सब कोई मेरी माया में फँसे हुए हैं। देवी का यह आशय शिव को वाञ्छनीय नहीं था अतः इसके निराकरण के लिए शिव ध्यानस्थ हो गये। शिव की यह ध्यान मग्न मुद्रा बड़ी सुन्दर और आकर्षक थी। भगवान् की यह मंगलमूर्त्ति गोरक्ष नाम से प्रसिद्ध है। देवी का मन चञ्चल हो उठा, समाधि भंग करने की इच्छा से चरण सपर्या करने लगीं किन्तु धक्का खाने की तरह गिर पड़ीं, देवी को फिसलने का भ्रम हुआ, फिर भी

इसी प्रकार २-३ वार परीक्षा कीं पर परिश्रम निष्फल हुआ। इस आश्चर्य को देख कर देवी की आग्रहोत्कण्ठा और भी दृढ़ होती गई। इस बात को ठीक २ जानने के लिये प्रयत्न करने लगीं।

दूसरा चरित्र यह है कि शिवाने अपने शरीर के उबटन से गणेश को उत्पन्न किया, भगवान् शिवने उसे मार डाला। देवी को बहुत क्रोध हो आया। सन्तुष्ट करने के लिये भगवान् शिव ने स्वविभूति से अलौकिक वालक को उत्पन्न कर के कहा देवि! इसका पालन पोषण करो, यह वालक अजर अमर अक्षर, और गोरक्ष है इसमें यथा नाम तथा गुण हैं॥

किन्तु देवी कोपावेश में थीं वदला चुकाने की नीयत से वालक को उठा कर पटक देना चाहा पर सफल न हुई, देवी चिढ़ गईं उनका रूप और भी उग्र हो आया। भगवान् शिवने वार वार सान्त्वना दिलाई और कहा हे देवि! यह वालकरूप अजेय अक्षय अभेद्य है, मैं इसी रूपसे संसार को अपने में लीन करने में समर्थ हूँ मेरा यह रूप भ्रम को दूर करने के लिए ही आविर्भाव हुआ है। तुम किसी प्रकार भी इसका परीक्षा कर सकती हो॥ तब गणेश को भी विकृतांग कर के जिला दिया। इससे देवी और भी क्षुब्ध हो गई। हठ वढ़ता गया अव इस अजरामर अक्षर भगवान् शिव गोरक्ष का थाह पाने के लिए देवी ने भी पूरी तरह से कमर कस लीं॥ फिर भी सब प्रयत्न निष्फल ही हुए अन्त प्राणान्त करने के लिए भी काली महाकाली भद्रकाली आदि भयंकर रूप धारण किया। भरण क्षरण स्वापन (पिण्डपात के कारण) कराने के लिए विमला हिंगुला ज्वाला का अवतार ग्रहण किया। इनसे गोरक्षनाथ जी का जो चरित्र हुआ सो हो चुका और ज्वालाजी के साथ जो हो रहा है वह अभी समाप्त नहीं हुआ है। देवी ज्वाला जी ने गोरक्ष नाथ जी से कोई (इसमें वहुत से मत हैं, जैसे पाणि

ग्रहण, आतिथ्यस्वीकार, अकस्मात् मृत्युगत मनुष्यों को पुनः जीवित, धर्माधर्मियों की परीक्षा, करना आदि का) वर मांगा है श्रीगुरु गोरक्षनाथ जी ने वर देना स्वीकार करते हुए एक डिब्बी ज्वालाजी को दी है और कहा है कि देवि ! तुम इस डिब्रिया में खिचड़ी के लिए पानी गरम करो मैं उपयुक्त सामग्री ले कर आता हूँ। इतना कहकर श्रीयोगिराज ने प्रस्थान किया किन्तु सतत लौटे नहीं। देवी ने बुला लाने के लिए नागार्जुन को भेजा वह भी वापस नहीं आया तब भीम को भेजा वह गोरखपुर में आया। साष्टाङ्ग दण्डवत् नमस्कार पूर्वक श्रीगुरु गोरक्षनाथजी से मिला और देवी का वृत्त सुनाया। भीम बहुत दूर से आया था बड़ी भूख प्यास थकावट लगी हुई थी। श्रीनाथजी बड़े प्रसन्न हुए और कृपा दृष्टि से भीम को देखा, भीम की सारी श्रान्तिव्यथा और क्षुत्पिपासा तत्क्षण दूर हो गई। गुरुवर ने कहा अच्छा जा आराम कर, जब जरूरत होगी तब बुलाऊँगा॥

तब से अद्यावधि गोरक्षपुर में गोरक्ष मन्दिर के सामने भीम सो रहा है, ज्वालापहाड़ में नागार्जुन तप कर रहा है, ज्वाला जी में खीचड़ी तैयार हो रही है॥

यह है गोरक्ष डिब्बी की कहानी तथा माया सहितत्व और माया रहितत्व का परिचायक गौरी गोरक्ष का चरित्र। इस क्रिया की समाप्ति सत्ययुग के समारम्भ में होगी॥

उक्त आश्चर्यमय लीला योग को देखने के लिए सिद्धर्षि मुनिजन देव गन्धर्व किन्नरगण आयेंगे। इनका भोजनोपचार गोरक्ष डिब्बी में राद्धान्न से होगा, इनकी पंक्ति कांगड़ा ज्वाला जी से नेपाल ज्वाला जी तक लगेगी। इस विषय का एक शब्द भी है—

उभा रहि अरजन परखिहु अरजन, सिद्ध केरी पारखा जुग जुग होवन॥
कलजुग जावणा सति जुग आवणा, सीध र साध केरा मेल मिलावणा

अम्बर ऊपर सीम चढैगी, समंद भीतरि भीत उभैगी ॥
असत्थाम का असत्र चलैगा, चकमक अगनी बाण फिरैगा ॥
रावल जोगी रणमै गजैगा, भरतपुरी का डंक बजैगा ॥
सतरी वाचा आन फिरैगी, सार की खीचड़ी तदूं सीजैगी ॥
मच्छेन्द प्रतापे जति गोरष बोलै, सब जग एकौंकार विरोलै ॥
उभा रहि अरजन परखिहु अरजन, सिद्ध केरी पारखा जुग जुग होवन

सत्ययुग कब होगा ?

उपरोक्त संचय से पाठकगण भली भाँति परिचित हो गये होंगे, अब सत्ययुग कब होगा ? वास्तव में सत् और धर्म के वर्त्ताव को सत्ययुग कहते हैं इसी का नाम मानवता है, मनुष्यों में मानवता का सञ्चार कब होगा ? इस विषय को जानने के लिये कुछ और प्रचलित जन श्रुतियाँ प्रस्तुत की जाती हैं ।

नेपाल की राजधानी 'काठमाण्डू' से सब कोई परिचित है । यह महायोगी लोपीयाद का देवों द्वारा एक ही रात में एक ही वृक्ष की लकड़ी से बनाया हुआ गोरक्षनाथजी के मन्दिर का नाम है । इसके सम्बन्ध में यह जनश्रुति और नाथतीर्थावली में भी लिखा है कि जब यह भवन बन कर तैयार हुआ तब नाथजी की यज्ञ करने की इच्छा हुई, तेतीस कोटी देवी देवताओं का आह्वान किया किन्तु नाथजी अन्तर्ध्यान हो गये यज्ञारम्भ नहीं हुआ आमन्त्रित देवतागण वहीं (नेपाल में) यज्ञकी प्रतीक्षा में रहने लगे । अब भी कभी-कभी उस मंदिर में शब्द होता है, यज्ञारम्भ हुआ ? उत्तर मिलता है, सामग्री जूट रही है ॥ इस यज्ञ की पूर्ति सत्यता वर्तने पर किसी चक्रवर्ती राजा से करवाई जायगी ॥ १ ॥

उक्त मन्दिर के पास राज भवन की भित्ति पर २६ लिपी में ७ भाषा का शिला लेख है, और पास एक नली लगी है। इसे पढ़ कर जो मतलव जानेगा उस नली से दूध की धारा वहेगी तब से सत्याचरण होने लगेगा ॥ २ ॥

मृगस्थली गोरक्षपीठ से दक्षिण आर्य तीर्थ गृगेश्वर मन्दिर नेपाल में विरूपाक्ष की विचित्र रंग की मूर्ति है जो भूमी से ऊपर निकलती (उगती) जाती हैं। वहाँ का जनश्रुति एवं पुरानी वंशावली का कथन है कि जब उक्त मूर्ति के पाद दर्शन होंगे तब कलि का अन्त होगा ॥ ३ ॥

(देवीनाथ मृगस्थली नेपाल से)

त्र्यम्बकेश्वर योगी अखाड़े के आहाते में इमली का पेड़ तीर्छा पड़ा है। यह सत्य युग के समारम्भ में सीधा हो जायगा ॥ ४ ॥

(एक नाथजी से)

अमृतसर दरबार की परिक्रमा में एक साथ वैर पीपल के वृक्ष हैं। वैर पीपल मे समाता जाता है, जब सम्पूर्णतया समा जायगा तब निष्कलंक भगवान् का प्राकट्य होगा। वह समय सत्ययुग का होगा ॥ ५ ॥

(भविष्यत वाक संग्रह से)

हिंगलाज मार्ग सोनम्यानी में दो गुरु शिष्यों की समाधि (मन्दिर) हैं ये समाधियाँ सरक-सरक कर निकट होती जा रही हैं जब मिल जायेंगी तब गुरु चेले जो उठेंगे। तब सत्ययुग का आरंभ होना बताते हैं ॥ ६ ॥

(रघुनाथ योगी से)

जिला रोहतक में योगियों का मठ है। इसके सम्बन्ध में यह उक्ति प्रसिद्ध है—

पाँचवीं पीरी छठीं अमीरी सातवीं खल्लाँ ढब्बाँ दिल्ली में गीदड़ चौकेंगे बाबा मस्तनाथ जी भूरे हाथी पर चढ़ आवेंगे राजधानी कायम करावेंगे (तब सद्धर्म का राज होगा) ॥ ७ ॥

(शिवनाथ, लाहोर वाले से)

दो घटनायें—

राजराजेश्वर सिद्ध श्री सुन्दरनाथ जी नाथ सम्प्रदाय के अन्तिम अमर योगी हैं, इनके दर्शन बद्रीनाथ के पर्वतों में पुण्यवानों को आज भी मिलते हैं। इनकी दो घटनायें यहाँ दी जाती हैं—

विक्रमी सम्वत् १६६२ के लगभग प्रयाग कुम्भ मेले में अकारण ही वैरागी महात्माओं ने योगियों पर अचानक हमला बोल दिया योगियों की बहुत बड़ी हानि हुई। सब योगी अपने प्रातः क्रिया में लीन थे, महाराज श्रीसुन्दरनाथजी की तो समाधि सदैव अडीग चढ़ी रहती थी, वे खाते पीते भी कुछ नहीं थे, केवल गगन गौ का दूध पीकर देदीप्यमान थे, जहाँ बैठते थे अचल अडीग रहते थे जब उठते थे तब कोई देखता नहीं था यानी चलते-चलते गुप्त हो जाते थे। "चलता जोगी पवन की मूठी बैठा जोगी लोहे की खूटी" के लक्षण इनमें घटते थे, (यह अलौकिकता देखने वाले भक्तगण अद्यावधि विद्यमान हैं) वैरागी महात्मा गण इन्हीं पर टूट पड़े बहुत सताया बहुत दुःख दिया। तमाम तम्बू तमोटी चीज़ वस्तु अस्त-व्यस्त कर दिये। गौरांग अफसर आकर फसाद को बहुत जल्दी काबू में कर लिया। देखा तो नुकशान बहुत हुआ है फिर भी एक नाथजी से पूछा आपका और क्या-क्या नुकशान हुआ है? नाथजी ने कहा कुछ नहीं। देखा तो सचमुच स्थिति पूर्व से भी अधिक अच्छी है। विस्मित होकर दङ्गाइयों को छोड़ दिया।

रात के समय सब सिद्धयोगी राजा साहब के पास आये और प्रार्थना पूर्वक कहा गुरु महाराज ! आप सब कुछ जानते हैं आखिर इसका क्या मतलब है ? इसका क्या नतीजा होना चाहिये ? सिद्ध राज अधिक नहीं बोलते थे थोड़े में कहा छठवें कुम्भ तक कोई भी योगी सिद्धि न देखाये, मेले में किसी की हानि न हो। यह आज्ञा सुन कर सब योगी प्रसन्न हुए तब से सिद्धयोगियों ने अपनी सिद्धि गुप्त करली। छठवें कुम्भ तक कोई भी सिद्धयोगी अपनी सिद्धि का उपयोग नहीं दिखायेंगे ॥ १ ॥

विक्रमी सम्वत् १९६५-६६ के लगभग शिकारपुर सिन्ध में सिद्ध योगी श्रीद्वारकानाथजी ने भण्डारा किया। इस मेले की आश्चर्यता देखने वाले भक्तगण आज भी हैं। उनका कहना है कि इस मेले (भण्डारे) में सनकादिसिद्ध, नवनाथसिद्ध, चौरासीसिद्ध अपना रूप बदल कर पधारे हुए थे देश के कोने-कोने से बड़े-बड़े पीर महन्त थानी मानी मकानी ज्ञानी ध्यानी रमते अवधूत योगी महात्मा आये थे, शीलनाथजी हीरानाथजी चमेलीनाथजी जमुनानाथजी आदि दिगम्बर योगविशारद सिद्धयोगी आये थे सिद्ध श्रीराजा सुन्दर नाथजी भी थे (इस मेले में ३० रु० सेर गुलाब के गुल बेचने वाले माली लोग आज भी विद्यमान हैं) योगियों का कहना है कि सन्ध्यारती के समय बिजली की चमक की भाँति भगवान् शिव के प्रत्यक्ष दर्शन होते थे। नवनाथादि सिद्ध बालकरूप में थे उनकी समाधि सदा एकरस अखण्ड रूप से लगी रहती थी। यह सब अमर योगी राजा सुन्दरनाथजी की ही आहूती शक्ति थी जो कैलाश की कन्दराओं के वास्तव्य महा योगियों को भी इस मंगल मेले में आकर भाग लेना पड़ा।

राजा साहब की समाधि २४ घण्टे चढ़ी रहती थी। वे बोलते चालते भी नहीं थे ॥ यह सब ढोंग ढकोसला समझ कर किसी

कुभक्त महाशय ने चरण वन्दना के वहाने आग उठा कर जाँघ पर रख दिया। लाखों मनुष्यों के संघर्ष में यह किसी को मालूम न हो सका, बहुत देर तक जाँघ जलती रही, कोयला माँस में गड़ गया, निकालने से नहीं निकला, डाक्टर चैनराय ने आप्रेशन द्वारा निकाला। योगिराज जैसे समाधि में लीन थे वैसे ही लीन रहे सी तक भी नहीं की।

(यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।
समदुःख सुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते)

इतना बड़ा अनर्थ देख कर सब योगी और भक्त गण बड़े दुःखी हुए करबद्ध होकर क्षमा प्रार्थना करने लगे, किन्तु योगिराज कुछ नहीं बोले। अन्तः रात्रिवेला में सब सिद्ध योगी मिलकर पास गये प्रयत्न पूर्वक समाधि खोली राजा साहब ने केवल इतना ही कहा अब सिद्ध योगी उत्तरा खण्ड में जायँगे। "बीसा-तीसा में हुशियार रहना" इतना ही कह कर फिर समाधी चढ़ा ली। प्रातः काल देखा तो उक्त योगियों में कोई भी नहीं था उनकी धूनि सूनी पड़ी थीं इन सिद्धों को न आते हुए न जाते हुए किसी ने देखा ॥ २ ॥

यह मेला नाथ सम्प्रदाय के सिद्ध योगियों का अन्तिम मेला था और सात दिन रहा। इसी मेले में भविष्य के सम्बन्ध में कहे हुए सांकेतिक शब्द भी मिलते हैं, कहते हैं कि ये शब्द तपस्वीश शीलनाथ और पीर खेमानाथजी के कहे हुए हैं—

चार में नसी वार में खसी बीस में बसी तीस में रसी ॥
सौ सो आनी सवा सो जानी मात करेगी चोरी ॥
बाल वृद्ध को कोई न जाना तार तार दे जोरी ॥

सारांश—संपूर्ण संग्रह सामग्री का अवलोकन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि वर्त्तमान पावसदी के समाप्ति पर्यन्त कोई सुख सुविधा न होगी ॥

उपसंहार

इस पुस्तिका में संगृहीत लोकोक्तियों की विलक्षणता (मोतियों की वर्षा होना, गोरक्ष डिब्बी में विना आँच जल का पकना आदि) पर अनुमानतः इतना ही कह सकते हैं कि सिद्ध पुरुषों की वाचा शक्ति में ही ऐसी विशेषता है जो प्रकृति के विरुद्ध भी अपना फल देखाने में समर्थ है। शब्दों के सम्बन्ध में सम्भवतः कोई शब्द ऐसे भी हो सकते हैं जो सामयिक व्यवहृति को देखकर ही दूरदर्शी महात्माओं ने अपने या अधिक विश्वास जमाने के लिहाज से बड़ों के नाम से रचे हों जो आगे चल कर लोकोक्ति प्रथा चाल में प्रचलित होते रहे। जो भी हो, इतना तो मानना पड़ेगा कि उनकी दूरदर्शीता बेमतलब की नहीं है। जैसे—

तब श्रीनाथ का तपो तपैगा, मुनिमन भाव न फलनी।
आतम हीना बुद्धि मलीना, अन्ध धुन्ध की करनी॥

अर्थात् जब मर्य्यादा की सीमा मिटा दी जाती है तब अनेकानेक संघर्ष जन्य उत्पात फूट पड़ते हैं, श्रेष्ठ पुरुषों के भाव भी कलुषित हो जाते हैं, आत्मबल और विचार शक्ति का ह्रास हो जाता है। विचार शक्ति के नष्ट हो जाने पर मनुष्य पशुकृत्य करने में भी नहीं हिचकिचाता॥ कितनी सुन्दर दूरदर्शीता है, तो भी आज का मानव ऐसे अमूल्य वचनों का अर्थ उलटा ही समझता है, या बेपरवाही करता है।

यही कारण है कि आज स्वतन्त्रता पाकर भी स्वत्व की रक्षा खतरे से खाली नहीं है। हमारा देश दिन प्रतिनिद विदेशी कला कवच में बूरी तरह से जकड़ता ही जा रहा है, सत्तासूत्र भी इतना शक्तिहीन और संशयात्मक है जो विदेशियोंके भूलभ्रम से रखे हुए इण्डु, इण्डिया, इण्डियन, हिन्दु, हिन्दी, हिन्दुस्तान आदि निन्दाभि-

व्यंजक नामों का वहिष्कार या परिष्कार नहीं कर सकता। देश की वेकारी (सिनेमा, रेडियो, फैशनवुली आदि की वेहूदगी) को भी दूर करने में असमर्थ है, देश में वेइल्मी, वेरोजगारी, भूखमरी फैली हुई है तो भी स्वतन्त्रतादि दिवसोत्सवोंमें व्यर्थकी खेल खुशी (वत्तिवाजी, आतशवाजी, टी वाजी, पार्टी वाजी आदि) में वहुत वड़ी धनराशि खर्च की जा रही है जो सामाजिक सुधारोपयोग में लगाने की है॥ स्वदेश भाषा भूषा को अपनाने में लज्जा समझी जाती है। यह तो विभाजन का फल स्वरूप है जो आज कहीं कहीं सुनने में आता है कि हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा घोषित की गई है। किन्तु कार्यान्वित १५ साल के वाद होगी सो तो वाद होगी ही। राज भाषा तो संस्कृत होनी चाहिये थी। जिससे न केवल भारत का भला होता किन्तु देश विदेश का भी भला होता और हमारा देश विदेशियों द्वारा भी धन्यवाद का भागी वनता॥ हिन्दी तो विदेशियों की पाली पोषी हुई अव्यवस्थित (सवकी साजी जो जिधर चाहे ले जा सकता है) भाषा है तो भी भारत की उपज समझ कर अभारतीय लोग हाय हसर मचा रहे हैं और लिपी के लिये तो मर मिटने को तैयार हैं॥

अन्यथा यानी विभाजन न होता लीग कांग्रेस एक होके रहते तो आज देश के कोने कोने में न केवल ऊर्दू साथ साथ पारसी या अरवी भी राष्ट्र भाषा घोषित होती और क्रिया में भी प्रयुक्त की गई होती। ऐसे सुनहरे अवसर से चूकजाना मुसलमानों के विनाश का पूर्वरूप और स्वत्वपाकर के भी देश भाषा वेश भूषादि स्वदेशानुकूलसभ्यता का अनादर करना हिन्दुओं के विध्वंस का आदिकारण सिद्ध होगा॥

देश के धर्मावलम्बियोंकी रूप रेखा भी विपरीत चाल से चल रही है। पुस्तक पढ़कर धर्मी और ज्ञानी वनना चाहते हैं किन्तु सदाचार या तपश्चर्या वृत्ति कोई नहीं चाहते। तुलतकीयों पर लेटे

लेटे धर्मोपदेश या ज्ञानोपदेश करने वाले अपने को तपस्वीश समझते हैं। दाढ़ी मूंछ मुड़ा कर सिरपर औरतों की भांति लम्बे लम्बे वाल सजाकर हिंजड़ों की सी सूरत वनाकर धर्म का प्रचार करनेवाले महानुभाव अपने को सदाचारी मानते हैं। फिल्मी गीतों की नकल करके मठों मन्दिरों यज्ञ हवनों में गायी जानेवाली रीति को आदर्श समझते हैं। अश्लीलास्पद फिल्मी गीतों को शीर्षक में रखकर धार्मिक कविता रचनेवाले महाशय लोग भी अपने को आदर्श कवियों से कम नहीं समझते। देश की सभ्यता के संरक्षक संस्कृत के विद्वान् कहते हैं कि देश की रक्षा यदि हो सकती है तो संस्कृत भाषा से ही हो सकती है। किन्तु अपने लड़के को बीए वनाने की कोशिश करते हैं॥ मतलव यह कि देशानुकूल सभ्यता का सच्चा अनुयायी कोई भी नहीं। देश की स्थिति हर तरफ से विगड़ चुकी है। भारतीय मानव मानवता खो वैठा है। देश की अवला स्त्रियों को स्वावलम्बिनी वनने का पाठ पढ़ाया जाता है इससे कितना भ्रष्टाचार फैलेगा यह कोई नहीं विचारता। मर्यादा की कड़ियोंको ढकोसला समझा जाता है। यहां तक कि माता पिता भाई भगिनी भाणिजी भतीजी फुफी मासी आदि नातेदारी को भी ढोल में पोलकी तरह माना जाता है। वेद पुराण पर तो तालियां ठोक कर ठठोली उड़ाई जाती है। यानी सव तरफ से अन्धकार ही अन्धकार छाया हुआ है और अन्धाधुन्ध की करणी का वोलवाला है। स्वदेश की शिक्षा दीक्षा वेश भूषा भाषा दयाधर्म मानवता, सभ्यता, कलाकौशलता आदि का तो जिन्दा जनाजा ले जा कर औरंगजेव की संगीत विद्याकी तरह कवरिस्तानमें दफनाया जा रहा है और हिमायती कोई नहीं। भारत का लाल ऐसा नहीं जो इसपर चूंकर के वोल भी सके। वोलेगा कैसे ? जव भारती निष्प्राणा है तव भारतीभाषी और भारत सप्राण हैं क्या ?

हे सर्वेश्वर ! हे भगवन् ! हे भारतभूमिके रक्षपाल ! गोरक्ष ! गोपाल ! इस दीनतापन्न देश की दशा जुगजुग से आप ही संभालते आये हैं और आज भी आप ही संभालेंगे, सतत संभालेंगे—

वेदाः खेदमिताः षडङ्गसहिता याता स्मृति-विंस्मृतिम्,
भाष्यं हास्यमगा त्पुराण-मगुणं रामायणं जीर्णताम्।
भग्नं भारत-मन्यतन्त्र-सहितं नो दृश्यते दर्शनम्,
नग्ना नास्तिकता नटत्यनुगृहं गोरक्ष ! रक्षावनिम् ॥

(पुनश्च)

शिक्षा याति लयं समं गुणिगणैः प्राप्ता परीक्षा क्षयं,
दीक्षा क्वापिगता क्षतः श्रुतितथो भिक्षाऽप्यहो ! दुर्लभा ।
ईक्षा दीन जनेषु नास्ति महतां धर्मे समीक्षा कुतः ?
प्रेक्षा कुण्ठगतिः कलौ करुणया गोरक्ष ! रक्ष क्षमाम् ॥

कविवर श्रीनरहरिनाथजी का

ॐ तत्सत्

Shri Haribamsha Prasad Upadhyay Baskota,
श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय वास्कोटा,
Ishwarniwas, Nepalganj, (Banke),
ईश्वरी निवास, नेपालगंज, (बाँके
P. O. RUPAIDIHA, ~~Dist.~~ Bahraich, (U. P.)

योगप्रचारिणी द्वारा प्रकाशित गोरक्षग्रन्थमाला के

प्रमुख पुष्प——

वाक्यपदीय-ब्रह्मकाण्डः—अमरयोगी भर्तृहरि (सिद्ध-विचारनाथ जी) विनिर्मित, शास्त्रार्थमहारथी योगी शंकरनाथ फलेग्रहिकृत संस्कृत टीका सहित। इस ग्रन्थके पढ़े विना शब्द शास्त्रका बोध अधूरा ही समझा जाता है। प्रस्तुत पुस्तक विद्वानों के उपयोग की है। मू० १) रु०।

महार्थमञ्जरी—महेश्वरानन्द अपरपर्याय श्रीगोरक्षनाथ विनिर्मिता। इसके संपादक उक्त फलेग्रहि जी हैं। ग्रंथ मूलमात्र है। यह शिवशक्तिवाद का सर्वोच्च दार्शनिक ग्रंथ है। नाथ संप्रदायके सिद्धान्तों को जानने की इच्छा वालों को परमोपयोगी है। मू० ॥)

सांख्यवसन्तः—ईश्वरकृष्णसूरिकृत कारिकाओं की व्याख्या कविप्रवर योगी नरहरिनाथ शास्त्री जी ने वसंततिलका छन्दों में बड़ी योग्यता से की है, कविता भी सरल और सुबोध है। सांख्यदर्शन के प्रेमियों और कपिलपन्थी योगियों के लिये उपयोगी है। मू० ॥)

श्रीचर्पटशतकम्—भापाटीका सहित इसमें श्रीचर्पटनाथकृत वैराग्यप्रधान सौ श्लोकों का सञ्चय है इसका दूसरा नाम चर्पट मञ्जरी हैं। इसको पढ़ने से मन को शान्ति और सन्तोप मिलता है। मू० ।=)

अत्याश्रमिविवेकः—यह संग्रह ग्रंथ है। इसमें नाथसंप्रदाय के सिद्धांतों का विशदीकरण बड़ी योग्यता से किया है। कविप्रवर योगी नरहरिनाथ शास्त्री जी ने बहुत प्राचीन हस्तलिखित

अनेक प्रतियों से मिलाकर बड़े परिश्रमसे इसका संपादन किया है। पुस्तक गद्य पद्य में हैं और बहुत सरल, स्पष्ट है। छप रही है।
मू० ५) रु०।

गोरक्षस्तुतिमञ्जरी—भाषाटीका सहित, यह राजाधिराज और राजदरबारी महाकवियों तथा वरप्राप्तभक्तों द्वारा निर्मित शिव, गोरक्ष, स्तुतियोंका संग्रह ग्रंथ है इसमें साहित्यिक गुण, दीपावली की तरह जगमगाते हैं, इसके पाठ से भक्तिभावना का स्रोत उमड़ने लगता है। पुस्तक अतिसरल और सर्वोपयोगी है। मू० १॥)

भर्तृहरिनिर्वेदनाटकम्—महाकवि हरिहर विरचित, कविप्रवर योगी नरहरिनाथ शास्त्री कृत भाषाटीका समेत। यह श्रीशंभु यति गुरु गोरक्षनाथ और अवन्तिकाधिपति श्रीभर्तृहरि जी का शान्तिरसप्रधान ऐतिहासिक नाटक है। प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी भाषाभाषियों के लिये भी अत्युपयोगी है इसकी हिन्दी सरल और मुहावरेदार है। मू० १)

संस्कृत-पारसीक-पदप्रकाशः—जहाँगीर के दरबारी कवि कर्णपूरकृत, योगी नरहरिनाथ शास्त्री द्वारा संपादित, यह ग्रन्थ संस्कृत और पारसी का शब्दकोष है, संस्कृत से पारसी और पारसी से संस्कृत सीखने के लिये और संस्कृत, पारसी, अरबीके संमिश्रण से बनी हुई वर्तमान हिंदी भाषाके शब्दार्थ का ठीक ठीक जानने के लिये अत्युपयोगी है। शब्द कैसे बनाये जाते हैं और प्रयुक्त किस प्रकार किये जाते हैं यह नियम हिंदी से भी समझाया गया है। प्रस्तुत पुस्तक सर्वोपयोगी है। मू० १)

विशेष विवरण के लिये जवाबी कार्ड लिखें—

पता—गोरक्षटिल्ला, मैदागिन काशी।